

जन जन की बात जन जन तक

साप्ताहिक

जन जन विचार



WEEKLY TRILINGUAL NEWSPAPER

Language : Hindi, Assamese & English

WEBSITE : www.janjanvichar.in

বাইজৰ কথা বাইজৰ মাজলৈ

সাপ্তাহিক

জন জন বিচাৰ

VOICE OF ALL, FOR ALL

WEEKLY

JAN JAN VICHAR

RNI Regd No. ASMUL/25/A2367::Guwahati, Friday, 30 October 2026 :: Year-1 Vol-42 Issue-21 :: शुक्रवार। 30 अक्टूबर 2026। शक संवत 1948। कार्तिक। कृष्ण। पंचमी। :: पृष्ठ-20। मूल्य-15 रुपए

मोदी कहीं नहीं जाएगा

जन चिंतन — धनेश्वर चौधरी

गाली की राजनीति

भारतीय राजनीति में अब नीतियों से ज्यादा नेताओं की जुबान चर्चा में है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर की गई अमर्यादित टिप्पणी ने एक बार फिर राजनीतिक शिष्टाचार को कटघरे में खड़ा कर दिया है। किसी भी नेता के लिए ऐसी भाषा उचित नहीं हो सकती। खरगे जैसे वरिष्ठ नेता से तो और अधिक संयम की अपेक्षा की जाती है। कांग्रेस को पुराने बयानों की आड़ लेने के बजाय बिना शर्त माफी मांगकर राजनीतिक मर्यादा का उदाहरण पेश करना चाहिए।

लेकिन सवाल केवल कांग्रेस का नहीं है। भाजपा का विरोध दर्ज कराना उसका राजनीतिक अधिकार है, मगर क्या इस विवाद को इतना बढ़ाना जरूरी है कि देश के वास्तविक मुद्दे ही पीछे छूट जाएं? सत्ता पक्ष के नेताओं की ओर से विपक्ष के लिए पहले इस्तेमाल किए गए **शेष पृष्ठ 2 पर**

एसआईआर पर कांग्रेस में मतभेद

बेंगलुरु। मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) को लेकर कांग्रेस के भीतर मतभेद सामने आए हैं। कर्नाटक के कांग्रेस मंत्री सतीश जारकीहोली ने राज्य में एसआईआर प्रक्रिया का बचाव करते हुए कहा है कि यह सही तरीके से संपन्न हुई। उन्होंने मतदाता सूची से करीब एक करोड़ नाम हटाए जाने को उचित ठहराते हुए कहा कि इनमें दोहरे नाम, मृत और दूसरे स्थानों पर जा चुके मतदाता शामिल थे।

एक साक्षात्कार में जारकीहोली ने कहा कि कांग्रेस ने अपने कार्यकर्ताओं को उचित प्रशिक्षण दिया था, जिसके कारण राज्य में प्रक्रिया व्यवस्थित ढंग से

खड़गे के विवादित बयान पर भाजपा का आक्रामक अभियान



जन जन विचार

...✍ नई दिल्ली

भारतीय राजनीति में शब्द अब केवल विचार व्यक्त करने का माध्यम नहीं रह गए हैं, बल्कि चुनावी हथियार भी बनते जा रहे हैं। बिहार की राजधानी पटना में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे की एक विवादित टिप्पणी ने इस सियासी सच्चाई को फिर उजागर कर दिया है। सभा में एक व्यक्ति की ओर से यह कहे जाने कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कहीं नहीं जाएंगे, के जवाब में खड़गे ने कहा, 'मोदी का बाप भी जाएगा।' 25 अक्टूबर को दिए गए इस बयान के बाद भाजपा ने कांग्रेस के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। पार्टी ने इसे प्रधानमंत्री और उनके परिवार के प्रति अपमानजनक भाषा बताते हुए माफी की मांग की है। विवाद अब एक सभा तक सीमित नहीं, बल्कि राष्ट्रीय राजनीति में आरोप-प्रत्यारोप का नया मुद्दा बन गया है।

यह घटनाक्रम पटना में बिहार के पहले मुख्यमंत्री डॉ. श्रीकृष्ण सिंह की 139वीं जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान हुआ। खड़गे मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण यानी **शेष पृष्ठ 3 पर**

मोदी का बाप भी जाएगा : खड़गे



नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के 'मोदी का बाप भी जाएगा' बयान पर सियासी विवाद गहरा गया है। 25 अक्टूबर को पटना में पूर्व मुख्यमंत्री श्रीकृष्ण सिंह की 139वीं जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में खड़गे मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) और भाजपा सरकार पर निशाना साध रहे थे। इसी दौरान दर्शक दीर्घा से एक व्यक्ति ने कहा कि मोदी कहीं नहीं जाएंगे। इस पर खड़गे ने जवाब दिया, 'मोदी का बाप भी जाएगा।' उन्होंने इस वाक्य को दोहराया भी।

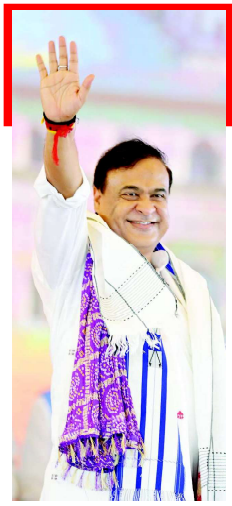
विवाद बढ़ने के बाद कांग्रेस ने खड़गे के बयान का बचाव किया। पार्टी महासचिव केसी वेणुगोपाल ने सफाई दी कि खड़गे का आशय प्रधानमंत्री के वैचारिक पिता यानी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से था, न कि उनके परिवार से।

उधर, टिप्पणी करने वाले व्यक्ति संतोष कुमार ने सफाई दी कि उनकी पूरी बात नहीं सुनी गई। उनका कहना था कि उन्होंने कहा था कि जब तक देश में जनता का विद्रोह नहीं होगा, मोदी नहीं जाएंगे। भाजपा ने खड़गे से माफी की मांग करते हुए देशभर में विरोध प्रदर्शन की घोषणा की है।



शिमला में भाजपा की पदयात्रा का नेतृत्व करेंगे हिमंत विश्व शर्मा

'लोकतंत्र बचाओ, अराजकता हटाओ' अभियान के तहत हिमाचल प्रदेश में चार स्थानों पर निकाली जाएंगी पदयात्राएं



जन जन विचार
...✍ शिमला

असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा अब हिमाचल प्रदेश में भाजपा के राजनीतिक अभियान की कमान संभालेंगे। एक नवंबर को वह शिमला में भाजपा की 'लोकतंत्र बचाओ, अराजकता हटाओ' पदयात्रा का नेतृत्व करेंगे। हिमाचल प्रदेश भाजपा अध्यक्ष राजीव बिंदल ने 28 अक्टूबर को इसकी घोषणा की।

शिमला में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में बिंदल ने बताया कि भाजपा राज्य के चार प्रमुख स्थानों पर पदयात्राएं आयोजित करेगी। इनका उद्देश्य लोकतांत्रिक संस्थाओं और संवैधानिक मूल्यों के प्रति जनजागरण करना है। शिमला में पदयात्रा पुराने बस अड्डे से शुरू होकर चौड़ा मैदान तक जाएगी। इसमें हिमंत के साथ नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर, सांसद अनुराग सिंह ठाकुर और सुरेश कश्यप सहित पार्टी के वरिष्ठ नेता शामिल होंगे। इस अभियान की शुरुआत 30 अक्टूबर को धर्मशाला से होगी। यहां सांसद राजीव भारद्वाज और पूर्व विधानसभा अध्यक्ष विपिन सिंह परमार पदयात्रा का नेतृत्व करेंगे। चार नवंबर को मंडी में जयराम ठाकुर और हमीरपुर में राजीव बिंदल के नेतृत्व में पदयात्राएं निकाली जाएंगी।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष राजीव बिंदल ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी और विपक्षी गठबंधन पर राजनीतिक अस्थिरता पैदा करने का आरोप लगाया। उन्होंने दावा किया कि चुनावी पराजयों के बाद विपक्ष लोकतांत्रिक व्यवस्था को कमजोर करने की कोशिश कर रहा है। बिंदल ने यह भी आरोप लगाया कि कांग्रेस बांग्लादेश जैसे हालात पैदा कर असंवैधानिक तरीके से सत्ता परिवर्तन का माहौल बनाना चाहती है।

हालांकि, ये आरोप भाजपा प्रदेश अध्यक्ष के राजनीतिक दावे हैं। इन पर कांग्रेस की प्रतिक्रिया सामने आना बाकी है।

हिमंत की शिमला पदयात्रा में भागीदारी को भाजपा के इस अभियान में पूर्वोत्तर के एक प्रमुख नेता की सक्रिय भूमिका के रूप में देखा जा रहा है। चार जिलों में प्रस्तावित पदयात्राओं के जरिए पार्टी कांग्रेस के खिलाफ अपना राजनीतिक अभियान तेज करने की तैयारी में है।

किशोर कवि बसंत नेपाल को किया याद

जन जन विचार
...✍ बिश्वनाथ चारिआली

दिवंगत किशोर कवि बसंत नेपाल की 28वीं पुण्यतिथि के अवसर पर बसंत स्मृति प्रतिष्ठान की ओर से बुरिगांग बालीपोखुरी स्थित प्रतिष्ठान के सभागार में वार्षिक स्मृति सभा एवं पुस्तक विमोचन समारोह आयोजित किया गया। साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विकास को समर्पित इस कार्यक्रम में साहित्यकारों, कलाकारों और समाजसेवियों ने दिवंगत कवि को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए साहित्य एवं संस्कृति के संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया।

डॉ. संजीव उपाध्याय और वेददीप उपाध्याय के संचालन में आयोजित समारोह की अध्यक्षता प्रतिष्ठित साहित्यकार, गीतकार एवं अनुवादक तथा प्रतिष्ठान के अध्यक्ष हरि लुइटेल ने की। कार्यक्रम का शुभारंभ बाल कलाकार कृतिका उपाध्याय की गीत प्रस्तुति से हुआ। प्रतिष्ठान के संरक्षक एवं प्रख्यात साहित्यकार-शोधकर्ता डॉ. खेमराज नेपाल ने संस्था की स्थापना, उसके उद्देश्यों और स्थापना काल से संचालित गतिविधियों की जानकारी दी। इस अवसर पर समाजसेवी एवं बाघमरा आंचलिक पंचायत की जिला परिषद सदस्य स्निग्धा गोस्वामी हजारिका ने कवि बसंत नेपाल के चित्र पर माल्यार्पण और दीप प्रज्ज्वलन कर श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने समाज निर्माण में कवियों और साहित्यकारों की भूमिका का उल्लेख करते हुए उनके योगदान को सम्मान देने की आवश्यकता बताई।

समारोह में बिश्वनाथ जिला नेपाली साहित्य सभा के अध्यक्ष एवं संगीत कलाकार लीला तिमसिना ने बसंत स्मृति प्रतिष्ठान के मुख्य गीत का विमोचन किया।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

गाली की राजनीति

अपमानजनक शब्द भी लोकतांत्रिक मर्यादा पर धब्बा हैं। एक पक्ष की बदजुबानी दूसरे पक्ष की बदजुबानी को जायज नहीं बना सकती।

यही भारतीय राजनीति का सबसे बड़ा संकट है—सत्ता और विपक्ष, दोनों जनता के सवालों से ज्यादा एक-दूसरे के बयानों में उलझे हैं। बेरोजगारी, महंगाई, युवाओं का भविष्य, चुनावी प्रक्रिया की विश्वसनीयता और सीमाओं की चुनौतियों पर गंभीर बहस की जरूरत है, लेकिन राजनीतिक दल अक्सर विवादों को ही अपना हथियार बना लेते हैं।

लोकतंत्र में विरोध जरूरी है, मगर विरोध का अर्थ अपमान नहीं। सत्ता पक्ष को आलोचना से भागना नहीं चाहिए और विपक्ष को भाषा की मर्यादा नहीं तोड़नी चाहिए। जनता ने नेताओं को शासन और जवाबदेही के लिए चुना है, गाली-गलौज का अखाड़ा सजाने के लिए नहीं। जब राजनीति में शब्दों का स्तर गिरता है, तब अंततः लोकतंत्र का स्तर गिरता है—और इसकी कीमत जनता चुकाती है।



रोहा। रोहा आंचलिक क्रीड़ा संघ की ओर से आयोजित दिवंगत पूर्व विधायक डिंबेश्वर दास एवं समाजसेवी धुपसिंह कोंवर स्मृति चलंत कप फुटबॉल प्रतियोगिता के फाइनल में सताबड़ी एफसी ने कटाहगुड़ी एफसी को 2-0 से हराकर खिताब अपने नाम किया। सांसद देवाशीष शर्मा ने फाइनल मैच का उद्घाटन किया।

राशिफल

30 अक्टूबर से 5 नवंबर, 2026 ॥ विक्रम संवत 2083-**मास** : कार्तिक, **पक्ष** : कृष्ण, **तिथि** :पंचमी

मेष : यह सप्ताह आपके लिए नई संभावनाएं लेकर आ सकता है। कार्यक्षेत्र में आपकी मेहनत का सकारात्मक परिणाम मिलने के संकेत हैं। नौकरीपेशा लोगों को नई जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक मामलों में सोच-समझकर निर्णय लें। पारिवारिक जीवन में मधुरता बनी रहेगी।

वृषभ : सप्ताह की शुरुआत कुछ व्यस्तता के साथ हो सकती है, लेकिन आगे परिस्थितियां अनुकूल होंगी। नौकरी और कारोबार में लाभ के अवसर मिल सकते हैं। रुका हुआ धन वापस मिलने की संभावना है। दांपत्य जीवन में आपसी समझ बढ़ेगी। अनावश्यक खर्च से बचें।

मिथुन : आपके लिए यह सप्ताह उत्साह और नई योजनाओं का रहेगा। कार्यक्षेत्र में आपकी प्रतिभा को पहचान मिल सकती है। कारोबार में नए संपर्क लाभदायक साबित होंगे। विद्यार्थियों को पढ़ाई में सफलता मिल सकती है। परिवार के साथ समय बिताने का अवसर मिलेगा।

कर्क : इस सप्ताह आपको धैर्य और समझदारी से काम लेना होगा। नौकरी में काम का दबाव बढ़ सकता है, लेकिन मेहनत का फल मिलेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार के संकेत हैं। पारिवारिक मामलों में किसी पुराने विवाद को सुलझाने का अवसर मिल सकता है।

सिंह : सप्ताह आपके लिए आत्मविश्वास और सक्रियता बढ़ाने वाला हो सकता है। कार्यक्षेत्र में नई जिम्मेदारियां मिल सकती हैं। कारोबारियों को विस्तार के अवसर मिलेंगे। आर्थिक स्थिति बेहतर होने की संभावना है। प्रेम संबंधों में निकटता बढ़ेगी। विवाद में अपनी वाणी पर नियंत्रण रखें।

कन्या : यह सप्ताह योजनाओं को पूरा करने के लिए अनुकूल रह सकता है। नौकरी में अधिकारियों का सहयोग मिलेगा। व्यापार में लाभ के अवसर बनेंगे, लेकिन निवेश से पहले पूरी जांच करें। विद्यार्थियों को मेहनत का अच्छा परिणाम मिल सकता है। परिवार में सुखद वातावरण रहेगा। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

तुला : सप्ताह में कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लेने पड़ सकते हैं। कार्यक्षेत्र में सहयोगियों के साथ तालमेल बनाए रखें। पुराने आर्थिक मामलों में राहत मिल सकती है। कारोबार में नई साझेदारी के प्रस्ताव मिल सकते हैं। दांपत्य जीवन में छोटी-मोटी गलतफहमियों को बातचीत से दूर करें।

वृश्चिक : आपके लिए यह सप्ताह मिश्रित परिणाम देने वाला रहेगा। नौकरी में प्रगति के अवसर मिल सकते हैं। कारोबार में किसी पुराने संपर्क से फायदा होने की संभावना है। आर्थिक मामलों में सावधानी बरतें। प्रेम संबंधों में भावनात्मक निकटता बढ़ेगी। वाहन चलाते समय विशेष सतर्कता रखें।

धनु : इस सप्ताह भाग्य का साथ मिलने से कई रुके हुए काम पूरे हो सकते हैं। नौकरी में पद और प्रतिष्ठा बढ़ने के संकेत हैं। कारोबारियों को नई योजनाओं से लाभ मिल सकता है। विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल है। परिवार में मांगलिक कार्य की चर्चा हो सकती है। स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें।

मकर : सप्ताह आपके लिए मेहनत और जिम्मेदारियों से भरा रह सकता है। कार्यक्षेत्र में धैर्य रखने से सफलता मिलेगी। आर्थिक मामलों में स्थिति स्थिर रहेगी, लेकिन बड़े निवेश से बचें। परिवार के सदस्यों का सहयोग मिलेगा। पुराने मित्र से मुलाकात संभव है। पर्याप्त नींद लें।

कुंभ : यह सप्ताह नए संपर्क और अवसर लेकर आ सकता है। नौकरी में आपकी कार्यक्षमता की सराहना होगी। व्यापार में लाभ के नए रास्ते खुल सकते हैं। आर्थिक स्थिति में सुधार संभव है। प्रेम संबंधों में मधुरता आएगी। पारिवारिक मामलों में दूसरों की भावनाओं का सम्मान करें।

मीन : सप्ताह आपके लिए सकारात्मक बदलाव का संकेत दे रहा है। कार्यक्षेत्र में नई जिम्मेदारी या अवसर मिल सकता है। आर्थिक स्थिति मजबूत करने के प्रयास सफल हो सकते हैं। विद्यार्थियों को पढ़ाई में एकाग्रता बनाए रखनी होगी। पारिवारिक जीवन सुखद रहेगा।

सप्ताह के पर्व/त्योहार

01 नवंबर (रविवार) : अहोई व्रत, भानु सप्तमी
02 नवंबर (सोमवार) : श्री राधा जयंती
05 नवंबर (गुरुवार) : रंभा एकादशी व्रत

●ज्योतिर्विद् आचार्य अखिलेश्वर शुक्ल
भाग्योदय : पहला तल्ला, सेंट्रल प्लाजा, एमएस रोड
फैंसी बाजार, गुवाहाटी-781001 मो.-94350 40387

धन दिशा



धनतेरस : समझदारी से करें खरीददारी

इस हफ्ते धनतेरस है। बाजार सजे हैं, दुकानदार 'ऑफर' के बोर्ड लगाए खड़े हैं, और विज्ञापन कह रहे हैं- 'आज खरीदना शुभ है।' धनतेरस पर खरीदारी की परंपरा पुरानी और सुंदर है। लेकिन इस परंपरा को समझदारी से निभाना भी उतना ही ज़रूरी है। तो इस धनतेरस पर कुछ सवाल खुद से जरूर पूछें।

क्या सच में 'डील' मिल रही है? धनतेरस से पहले कई दुकानदार कीमतें ऊपर करते हैं और फिर '20% छूट' दिखाते हैं। सोने की बात करें तो उसकी कीमत हर दिन बदलती है - धनतेरस पर सोना सस्ता नहीं होता, बस खरीदने की मानसिकता अलग होती है। इसलिए पिछले महीने की कीमत से तुलना जरूर करें।

सोना कैसे खरीदें? अगर सोना खरीदना ही है, तो गहनों के बजाय Gold Coins या Gold ETF को प्राथमिकता दें। गहनों में मेकिंग चार्ज 10-25% तक होता है जो बेचते वक्त नहीं मिलता। Gold ETF या Gold Mutual Fund में मेकिंग चार्ज नहीं है, कहीं रखने की चिंता नहीं, और SEBI-regulated है। Digital Gold से बचें : वह न आरबीआई से नियंत्रित है न सेबी से।

इलेक्ट्रॉनिक्स और बड़ी खरीदारी - ईएमआई का जाल। टीवी, फ्रिज, मोबाइल — इन पर 'नो-कॉस्ट ईएमआई' का बोर्ड दिखता है। लेकिन नो-कॉस्ट ईएमआई असल में मुफ्त नहीं होती- प्रोसेसिंग फीस, इंश्योरेंस, और कुछ मामलों में ईएमआई सब्वेंशन का बोझ कहीं न कहीं से वसूला जाता है। अगर ईएमआई लेनी पड़े तो अपने महीने की आमदनी से 30% से ज्यादा न हो- यह नियम पक्का रखें।

क्या खरीदना सच में जरूरी है? धनतेरस का मतलब खर्च करना नहीं, धन के प्रति सम्मान दिखाना है। अगर घर में पहले से टीवी काम कर रहा है तो नया लेना जरूरी नहीं। त्योहार की असली खुशी परिवार के साथ है - शोरूम की भीड़ में नहीं।

अगर पैसे बचे हों तो? इस धनतेरस अगर हाथ में थोड़ा पैसा है तो उसे एसआईपी में डालें, या किसी पुराने लोन का प्री-पेमेंट करें। यह सबसे बड़ी 'खरीदारी' होगी- जो आपको साल भर खुशी देगी।

अगले हफ्ते : पैसों की सफाई भी जरूरी है। खर्च का हिसाब लगाएं और नए वित्तीय साल की तैयारी शुरू करें।

इस कॉलम के लिए आपका कोई सवाल है? हमें भेजिए

-कोमल जैन
पर्सनल फाइनेंस एक्सपर्ट, संस्थापक, वेल्थप्लायर्स- मो. 9004510577

चीनी सैनिकों से टकराव!

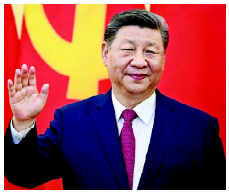
बीजिंग बोला-समझौतों का पालन कर रहा चीन

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली/बीजिंग

अरुणाचल प्रदेश में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर भारतीय और चीनी सैनिकों के बीच जारी आमने-सामने की स्थिति के बीच बीजिंग ने दावा किया है कि चीन दोनों देशों के बीच हुए समझौतों और महत्वपूर्ण सहमतियों का सख्ती से पालन कर रहा है। चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता गुओ जियाकुन ने कहा कि चीन सीमावर्ती क्षेत्रों में अपनी क्षेत्रीय संप्रभुता और सीमा पर स्थिरता बनाए रखने के लिए नियमित गश्त और प्रबंधन गतिविधियां करता है। हालांकि, चीन के इस दावे के बीच भारत पहले ही स्पष्ट कर चुका है कि चीनी सैनिकों के निर्धारित गश्ती तरीकों से हटने पर सीमा के हालात बिगड़ते हैं।

आईटीबीपी प्रमुख ने बताया था टकराव का मामला

ताजा विवाद तब सामने आया, जब भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (आईटीबीपी) के महानिदेशक शत्रुजीत कपूर ने अरुणाचल प्रदेश में एलएसी के कई स्थानों पर भारतीय और चीनी सैनिकों के बीच आमना-सामना होने की जानकारी दी। उन्होंने कहा था कि कुछ स्थानों पर यह स्थिति जारी है। कपूर ने इन परिस्थितियों से निपटने में आईटीबीपी की 'शौर्य' कमांडो टुकड़ियों के प्रदर्शन की सराहना भी की थी। उनके बयान के बाद सीमा पर वास्तविक स्थिति और



सुरक्षा तैयारियों को लेकर चर्चा तेज हो गई।

भारत ने गश्ती व्यवस्था से विचलन पर जताई चिंता

भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने 23 अक्टूबर को कहा था कि भारत-चीन सीमावर्ती क्षेत्रों में स्थिति समय-समय पर तब बिगड़ती है, जब चीनी सेनाएं निर्धारित गश्ती तरीकों से हट जाती हैं। उन्होंने यह भी कहा कि दोनों देश वास्तविक नियंत्रण रेखा पर लंबित मुद्दों को सुलझाने तथा गलतफहमी और किसी गलत आकलन से बचने के लिए राजनयिक और सैन्य माध्यमों से संपर्क बनाए हुए हैं।

भारत के अनुसार, दोनों पक्ष कुछ संवेदनशील क्षेत्रों में एलएसी की समझ बेहतर बनाने के उपायों पर चर्चा करने के लिए भी सहमत हुए हैं, ताकि सीमा प्रबंधन को अधिक प्रभावी बनाया जा सके।

चीन ने भारत से भी सहयोग की अपेक्षा जताई

चीनी प्रवक्ता गुओ जियाकुन ने कहा कि चीन और भारत राजनयिक तथा सैन्य माध्यमों से संपर्क में हैं। उन्होंने उम्मीद जताई कि भारत भी दोनों देशों के बीच बनी सहमतियों को लागू करने और सीमावर्ती क्षेत्रों में शांति एवं स्थिरता बनाए रखने के लिए ठोस कदम उठाएगा।

बीजिंग का यह बयान ऐसे समय आया है, जब आईटीबीपी प्रमुख की टिप्पणियों ने अरुणाचल प्रदेश में सीमा पर जारी टकराव की स्थिति को फिर चर्चा में ला दिया है। हालांकि, सार्वजनिक बयानों में टकराव के विशिष्ट स्थानों, घटनाओं की पूरी परिस्थितियों और उनके समाधान की स्थिति का विस्तृत ब्योरा सामने नहीं आया है।

ड्रोन और आधुनिक युद्ध क्षमता पर भारत का जोर

आईटीबीपी प्रमुख ने सीमा सुरक्षा की तैयारियों के संदर्भ में ड्रोन और ड्रोन-रोधी प्रणालियों की अहमियत पर भी जोर दिया था। उन्होंने कहा था कि चीन की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) ने अपनी सैन्य क्षमताओं का आधुनिकीकरण किया है, इसलिए बदलती युद्ध परिस्थितियों के अनुरूप भारतीय बलों को भी अपनी तैयारी मजबूत करनी होगी।

सीमा पर बार-बार होने वाले आमने-सामने के घटनाक्रम के बीच भारत और चीन के सामने चुनौती यह है कि जमीनी स्तर पर तनाव को बढ़ने से रोका जाए और मौजूदा संवाद तंत्र के जरिए विवादों का समाधान निकाला जाए। दोनों देशों के बीच सीमा पर शांति बनाए रखना द्विपक्षीय संबंधों को सामान्य बनाने के लिए भी महत्वपूर्ण बना हुआ है।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

भारत में 'रेजीम चेंज' की ...

एसआईआर में कथित अनियमितताओं और भाजपा पर अपने राजनीतिक आरोपों को लेकर बोल रहे थे। इसी दौरान श्रोताओं में मौजूद एक व्यक्ति ने प्रधानमंत्री मोदी के सत्ता में बने रहने को लेकर टिप्पणी की। खड़गे ने आवेश में जवाब दिया और उनके शब्दों ने राजनीतिक विवाद को जन्म दे दिया।

भाजपा ने इस टिप्पणी को प्रधानमंत्री के प्रति अमर्यादित भाषा का उदाहरण बताते हुए कांग्रेस नेतृत्व से जवाब मांगा। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह सहित भाजपा के कई नेताओं ने खड़गे की आलोचना की। भाजपा ने 26 अक्टूबर को देशभर में विरोध प्रदर्शन करने की घोषणा भी की। इस बीच, पटना में इस बयान को लेकर शिकायत दर्ज कराए जाने की खबर भी सामने आई है। हालांकि, शिकायत दर्ज होना किसी अपराध के सिद्ध होने के समान नहीं है।

भाजपा की मुहिम : बयान से बड़ा राजनीतिक संदेश

भाजपा के लिए यह विवाद कांग्रेस को घेरने का अवसर बन गया है। पार्टी की रणनीति का केंद्र यह संदेश है कि प्रधानमंत्री के प्रति राजनीतिक विरोध अपनी जगह है, लेकिन व्यक्तिगत और अपमानजनक भाषा स्वीकार्य नहीं होनी चाहिए। भाजपा इस मुद्दे को केवल खड़गे के बयान तक सीमित रखने के बजाय कांग्रेस के राजनीतिक आचरण और नेतृत्व की जिम्मेदारी से जोड़ने की कोशिश कर रही है।

राजनीति में ऐसे विवादों का प्रभाव तत्काल समाचार चक्र से आगे भी जा सकता है। किसी नेता की एक टिप्पणी को बार-बार दोहराकर व्यापक राजनीतिक संदेश में बदला जा सकता है। सोशल मीडिया पर वीडियो, बयान और प्रतिक्रियाएं तेजी से फैलती हैं। इससे मूल मुद्दों की तुलना में विवादित शब्द अधिक चर्चा में आ जाते हैं।

भाजपा की चुनौती भी यही है कि वह इस विवाद को केवल बयानबाजी तक सीमित न रखे, बल्कि अपनी आपत्ति को राजनीतिक मर्यादा और सार्वजनिक संवाद के व्यापक प्रश्न से जोड़े। दूसरी ओर, कांग्रेस के लिए यह स्पष्ट करना जरूरी है कि विरोध की राजनीति में भाषा की सीमा कहां निर्धारित होती है।

कांग्रेस के सामने बचाव की चुनौती

कांग्रेस की ओर से इस घटनाक्रम के संदर्भ में यह तर्क सामने आया है कि खड़गे के साथ कार्यक्रम में अभद्र व्यवहार हुआ और उनकी टिप्पणी को पूरे संदर्भ से अलग करके पेश किया जा रहा है। कांग्रेस सांसद पवन खेड़ा ने खड़गे का बचाव करते हुए भाजपा पर कार्यक्रम में व्यवधान और राजनीतिक उकसावे का आरोप लगाया। पार्टी की ओर से एसआईआर और मतदाता सूची से जुड़े आरोप भी राजनीतिक बहस का हिस्सा बने हुए हैं।

भाजपा को मिलेगा राजनीतिक लाभ?

इस विवाद से भाजपा को तत्काल राजनीतिक संदेश देने का अवसर जरूर मिला है, लेकिन किसी एक बयान से चुनावी लाभ सुनिश्चित हो जाता है, ऐसा कहना जल्दबाजी होगी। जनता नेताओं की भाषा के साथ-साथ रोजगार, महंगाई, शिक्षा, स्वास्थ्य, विकास और सरकार के कामकाज का भी मूल्यांकन करती है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का राजनीतिक प्रभाव केवल किसी विरोधी नेता के बयान से निर्धारित नहीं होता। उनकी लोकप्रियता, भाजपा का संगठन, सरकार का प्रदर्शन, विपक्ष की विश्वसनीयता और स्थानीय राजनीतिक परिस्थितियां—ये सभी कारक चुनावी परिणामों को प्रभावित करते हैं। इसलिए इस विवाद को मोदी की लोकप्रियता का निर्णायक प्रमाण या कांग्रेस के लिए निश्चित चुनावी नुकसान मानना उचित नहीं होगा।

फिर भी भाजपा के लिए यह मुद्दा विपक्ष की भाषा पर सवाल उठाने और अपने समर्थकों को एक साझा राजनीतिक संदेश देने का माध्यम बन सकता है। कांग्रेस के लिए चुनौती यह है कि वह भाजपा के आरोपों का जवाब देते हुए अपने मूल राजनीतिक मुद्दों को पीछे न छूटने दे।

संपादकीय

बैंक सोते रहे, ठग लूटते रहे!

डिजिटल अरेस्ट के नाम पर देश में लोगों की जीवनभर की कमाई लूटी जा रही है। ठग पुलिस और जांच एजेंसियों का अधिकारी बनकर गिरफ्तारी का भय दिखाते हैं और खातों से लाखों-करोड़ों रुपए निकलवा लेते हैं। सवाल है कि जब बैंक हर लेन-देन का ब्योरा रखते हैं, तो संदिग्ध खातों में ठगी की रकम पहुंचने पर उनकी निगरानी व्यवस्था कहां चली जाती है?

सुप्रीम कोर्ट ने इस गंभीर समस्या पर बैंकों की जवाबदेही तय करने की जरूरत रेखांकित की है। अदालत ने कहा कि यदि किसी वित्तीय संस्थान की जांच-पड़ताल में विफलता के कारण धोखाधड़ी होती है, तो पीड़ित को गंवाई गई रकम के बराबर मुआवजा देने का प्रावधान होना चाहिए। यह अभी लागू मुआवजा व्यवस्था नहीं, बल्कि प्रस्तावित नियामकीय ढांचे में शामिल करने की बात है। अदालत का संदेश साफ है-ठगी के बाद जांच से बेहतर है, ठगी को समय रहते रोकना।

जब कोई खाताधारक सामान्य तौर पर छोटी रकम का लेन-देन करता है और अचानक लाखों रुपये हस्तांतरित करने लगता है, तो बैंक को सतर्क क्यों नहीं होना चाहिए? कृत्रिम मेधा और स्वचालित निगरानी के दौर में संदिग्ध लेन-देन पहचानना असंभव नहीं है। जरूरत तकनीक से अधिक जवाबदेही की है। लापरवाही साबित होने पर संबंधित संस्थानों और जिम्मेदार अधिकारियों पर कार्रवाई होनी चाहिए। बैंकों, पुलिस और नियामकों को अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। म्यूल खातों पर लगाम, संदिग्ध लेन-देन पर तत्काल कार्रवाई और प्रभावी मुआवजा व्यवस्था के बिना डिजिटल सुरक्षा का दावा खोखला है। नागरिक का पैसा सुरक्षित नहीं, तो डिजिटल अर्थव्यवस्था पर भरोसा कैसे कायम रहेगा?

लोकतंत्र की आवाज और सुरक्षा का सवाल

दिल्ली में एक नवंबर को प्रस्तावित विपक्षी गठबंधन आईएनडीआईए की रैली से पहले केंद्र सरकार ने राजधानी में केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों (सीएपीएफ) की 270 कंपनियों की तैनाती 16 नवंबर तक बढ़ा दी है। यह तीसरी बार है जब इनकी तैनाती की अवधि बढ़ाई गई है। सीआरपीएफ, बीएसएफ, आईटीबीपी, एसएसबी और अन्य बलों की इतनी बड़ी मौजूदगी राजधानी की सुरक्षा व्यवस्था को लेकर सरकार की चिंता को दर्शाती है।

निश्चित रूप से राजधानी की सुरक्षा और कानून-व्यवस्था बनाए रखना सरकार की जिम्मेदारी है। त्योहारों का मौसम हो या किसी बड़े राजनीतिक आयोजन की संभावना, प्रशासन को सतर्क रहना चाहिए। लेकिन लोकतंत्र में विरोध-प्रदर्शन भी नागरिकों और राजनीतिक दलों का संवैधानिक अधिकार है। सरकार की आलोचना करना, रैली निकालना और अपनी मांगों के लिए आवाज उठाना अराजकता नहीं है।

असल सवाल यह है कि क्या संभावित विरोध को पहले से कानून-व्यवस्था का खतरा मानकर सुरक्षा का इतना बड़ा इंतजाम जरूरी हो गया है? यदि किसी संगठन से हिंसा या सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाने की आशंका है तो प्रशासन को उसके विरुद्ध कानून के तहत कार्रवाई करनी चाहिए, लेकिन शांतिपूर्ण प्रदर्शन करने वालों के अधिकारों की रक्षा भी उतनी ही जरूरी है।

वृद्ध संरक्षण पहल

जन जन विचार

...✍ ललित गर्ग

भारत की संस्कृति में माता-पिता को देवतुल्य माना गया है। यहां कहा गया है-'मातृदेवो भव, पितृदेवो भव।' जिस देश में माता-पिता के चरणों में स्वर्ग देखने की परंपरा रही हो, उसी देश में यदि वृद्धावस्था में माता-पिता अपने ही घर में उपेक्षा, अपमान, अकेलेपन और असुरक्षा का दंश झेलने को विवश हों, तो यह केवल पारिवारिक विघटन नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक चेतना के सामने खड़ा एक गंभीर प्रश्न है। जिस बुजुर्ग ने अपनी संतान के भविष्य के लिए वर्तमान को खपा दिया, यदि उसी संतान के पास उसके बुढ़ापे के लिए समय, संवेदना और स्नेह न बचे, तो विकास की चमक के बीच मानवीय मूल्यों का अंधेरा साफ दिखाई देता है। ऐसे समय में केरल विधानसभा द्वारा अक्टूबर 2026 में वरिष्ठ नागरिकों के संरक्षण से संबंधित व्यापक विधेयक पारित किया जाना एक आशाजनक पहल है। यह कानून की किताब में जुड़ा एक नया अध्याय भर नहीं, बल्कि बुजुर्गों के जीवन में सम्मान, सुरक्षा और भरोसे का नया सूर्योदय बनने की क्षमता रखता है। भारत में 60 वर्ष और उससे अधिक आयु के नागरिकों की संख्या लगभग 15 करोड़ बताई जा रही है। अनुमान है कि यह आबादी 2036 तक लगभग 23 करोड़ और 2050 तक 34 करोड़ से अधिक हो सकती है। यह बदलती जनसांख्यिकी हमें चेतावनी भी देती है और अवसर भी। चिकित्सा विज्ञान की प्रगति तथा बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं ने मनुष्य की आयु बढ़ाई है, लेकिन प्रश्न यह है कि क्या हमने जीवन की बढ़ती अवधि को गरिमापूर्ण बनाने की तैयारी भी की है? सिर्फ लंबी उम्र उपलब्धि नहीं है, उस उम्र में सम्मान, आत्मनिर्भरता और अपनापन बनाए रखना ही वास्तविक उपलब्धि है।

केरल की इस पहल का महत्व इसलिए बढ़ जाता है कि यह बुजुर्गों की समस्याओं को केवल परिवार की निजी जिम्मेदारी मानकर छोड़ देने के बजाय सामाजिक और संस्थागत दायित्व के रूप में देखती है। विधेयक में वरिष्ठ नागरिकों के साथ शारीरिक एवं मानसिक दुर्व्यवहार, क्रूरता और उनकी इच्छा के विरुद्ध उन्हें बेसहारा छोड़ने जैसे कृत्यों के लिए दंड का प्रावधान किया गया है। इसके साथ संरक्षण इकाइयों, देखभाल केंद्रों के नियमन, देखभालकर्ताओं के प्रशिक्षण और शिकायतों के निवारण जैसी व्यवस्थाओं पर जोर दिया गया है। साइबर धोखाधड़ी से बचाव तथा बुजुर्गों के स्वास्थ्य संबंधी निर्णयों के अधिकार जैसे विषयों को स्थान देना भी बदलते समय की जरूरतों को समझने का संकेत है। इस पहल का मूल संदेश स्पष्ट है-बुजुर्गों की सेवा सद्भावना का विषय अवश्य है, लेकिन उनकी सुरक्षा और गरिमा सुनिश्चित करना सामाजिक व्यवस्था का अनिवार्य दायित्व भी है। इस विधेयक की सबसे संवेदनशील अवधारणा है-'एजिंग इन प्लेस', अर्थात बुजुर्गों को यथासंभव उनके अपने घर और परिचित परिवेश में सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अवसर देना। वृद्धाश्रमों की आवश्यकता से इनकार नहीं किया जा सकता, लेकिन माता-पिता के लिए घर का एक कमरा भी तब अधिक मूल्यवान होता है, जब उसमें अपनत्व की गर्माहट हो। बुजुर्गों को केवल भोजन, दवा और बिस्तर नहीं चाहिए, उन्हें बातचीत करने वाला साथी, उनकी बात सुनने वाला कान, उनके अनुभवों को समझने वाला मन और उनके अस्तित्व को स्वीकार करने वाला परिवार चाहिए। उम्र के इस पड़ाव पर कई बार आर्थिक अभाव से अधिक भावनात्मक अभाव पीड़ा देता है। जिस घर में बुजुर्गों की आवाज अनसुनी हो जाती है, वहां दीवारें तो रहती हैं, लेकिन परिवार की आत्मा कमजोर पड़ने लगती है।

आज संयुक्त परिवारों का विघटन, महानगरों की भागदौड़, विदेशों की ओर पलायन और बढ़ती व्यक्तिवादी प्रवृत्ति ने बुजुर्गों के जीवन को कठिन बनाया है। कभी दादा-दादी और नाना-नानी परिवार की जीवंत पाठशाला होते थे, उनकी कहानियों में इतिहास, अनुभवों में विवेक और आशीर्वाद में जीवन की पूंजी मिलती थी। आज उसी अनुभव-संपदा को कई बार अनुपयोगी समझ लिया जाता है। संपत्ति के लिए माता-पिता पर दबाव डालना, उनकी जमा-पूंजी पर अनुचित अधिकार जमाना, बीमारी में उन्हें अकेला छोड़ देना अथवा उनकी भावनाओं को ठेस पहुंचाना सभ्य समाज के माथे पर कलंक है। यह कैसी विडंबना है कि जिन हाथों ने बच्चों को चलना सिखाया, उन्हीं हाथों को बुढ़ापे में सहारे के लिए तरसना पड़े! केरल का विधेयक इस समस्या के समाधान की दिशा में व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। इसमें वरिष्ठ नागरिकों के साथ दुर्व्यवहार और उन्हें बेसहारा छोड़ने पर तीन वर्ष तक के कारावास तथा 50 हजार रुपए तक के जुर्माने का प्रावधान है। देखभाल केंद्रों के पंजीकरण, देखभालकर्ताओं के प्रशिक्षण, शिकायतों के निवारण और साइबर धोखाधड़ी से सुरक्षा जैसी व्यवस्थाएं भी प्रस्तावित हैं। साथ ही, वरिष्ठ नागरिकों के चिकित्सा संबंधी पूर्वनिर्धारित निर्णयों, कानूनी सहायता और डिजिटल सेवाओं तक पहुंच को महत्व दिया गया है। उल्लेखनीय है कि विधानसभा ने यह विधेयक 26 अक्टूबर 2026 को सर्वसम्मति से पारित किया है, इसे कानून के रूप में लागू होने के लिए राज्यपाल की स्वीकृति की प्रक्रिया पूरी करनी होगी।

इस पहल का एक दूरदर्शी पक्ष 'सिल्वर इकोनॉमी' की अवधारणा भी है। बुजुर्गों को केवल सहायता प्राप्त करने वाले नागरिकों के रूप में नहीं, बल्कि समाज के सक्रिय योगदानकर्ता के रूप में देखा जाना चाहिए। उनके अनुभव, ज्ञान, कौशल और जीवन-दृष्टि का उपयोग शिक्षा, परामर्श, सामाजिक सेवा, उद्यमिता और सामुदायिक विकास में किया जा सकता है। सेवानिवृत्ति का अर्थ प्रतिभा की समाप्ति नहीं, बल्कि जीवन की दूसरी पारी का आरंभ भी हो सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि समाज उन्हें बोझ नहीं, अपनी अमूल्य पूंजी माने। पेड़ जब पुराना होता है, तब भी उसकी छाया कम मूल्यवान नहीं हो जाती। इसी तरह अनुभव की परिपक्वता किसी भी राष्ट्र की विकास-यात्रा को दिशा दे सकती है। अब समय है कि केंद्र सरकार के साथ दूसरे राज्य भी केरल की इस पहल से प्रेरणा लें। केंद्र के माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों के भरण-पोषण एवं कल्याण अधिनियम, 2007 के प्रभावी क्रियान्वयन की समीक्षा हो तथा आवश्यकतानुसार उसे और सशक्त बनाया जाए। राज्यों में वरिष्ठ नागरिकों के लिए समर्पित संरक्षण इकाइयां, सुलभ शिकायत व्यवस्था, निःशुल्क कानूनी सहायता, घर पर स्वास्थ्य सेवाएं और सुरक्षित सामुदायिक केंद्र विकसित किए जाएं। पुलिस, अस्पतालों, बैंकों और स्थानीय निकायों में बुजुर्गों की समस्याओं के त्वरित समाधान की व्यवस्था हो। साथ ही, विद्यालयों और महाविद्यालयों में पीढ़ियों के बीच संवाद तथा परिवारों में संवेदनशीलता विकसित करने के अभियान चलाए जाएं। कानून अपराध होने के बाद दंड दे सकता है, लेकिन संस्कार अपराध की नौबत आने से पहले ही रोक सकते हैं।

अंततः बुजुर्गों की सुरक्षा का प्रश्न केवल एक आयु-वर्ग के कल्याण का विषय नहीं, बल्कि भारत के भविष्य की दिशा का निर्धारक है। आज जो युवा हैं, वे कल वरिष्ठ नागरिक होंगे। इसलिए बुजुर्गों के लिए बनाई गई संवेदनशील व्यवस्था वास्तव में हमारे अपने भविष्य की सुरक्षा है। विकसित भारत और विश्वगुरु भारत का स्वप्न तभी सार्थक होगा, जब आर्थिक समृद्धि के साथ मानवीय संवेदना, तकनीकी प्रगति के साथ नैतिक चेतना और आधुनिक जीवन के साथ पारिवारिक आत्मीयता भी विकसित होगी। केरल की पहल एक नई रोशनी का संकेत है, लेकिन इस रोशनी को देश के प्रत्येक घर तक पहुंचाना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है।

भागलपुर में चाय दुकानदार दंपति की गोली मारकर हत्या

जन जन विचार
...✍ भागलपुर

बिहार के भागलपुर जिले में अपराधियों ने एक दंपति की गोली मारकर हत्या कर दी। नवगछिया पुलिस जिला के इस्माईलपुर थाना क्षेत्र में गुरुवार तड़के हुई इस दोहरी हत्या से इलाके में सनसनी फैल गई। मृतकों की पहचान रंजन मंडल और उनकी पत्नी किरण देवी के रूप में हुई है। वारदात के बाद आक्रोशित ग्रामीणों ने पुलिस के सामने हत्यारों की तत्काल गिरफ्तारी की मांग करते हुए शव उठाने का विरोध किया।

जानकारी के अनुसार, रंजन मंडल और उनकी पत्नी इस्माईलपुर हटिया में चाय-नाश्ते की दुकान चलाते थे। गुरुवार तड़के करीब तीन से चार बजे के बीच दोनों अपनी दुकान में सो रहे थे। इसी दौरान हथियारबंद अपराधियों ने उन पर हमला कर दिया। हमले में रंजन मंडल की मौके पर ही मौत हो गई।

पति को गोली लगते देख किरण देवी जान बचाने के लिए भागने लगीं, लेकिन हमलावरों ने उनका पीछा किया और उन्हें भी गोली मार दी। गंभीर रूप से घायल किरण देवी ने भी दम तोड़ दिया। घटना की खबर फैलते ही बड़ी संख्या में ग्रामीण मौके पर जमा हो गए।

ग्रामीणों ने किया पुलिस का विरोध

दोहरी हत्या से नाराज ग्रामीणों ने पुलिस-प्रशासन के खिलाफ आक्रोश जताया। लोगों ने हत्यारों की तत्काल गिरफ्तारी की मांग करते हुए पुलिस को शव उठाने से रोक दिया। बाद में पुलिस अधिकारियों ने ग्रामीणों को समझाया, जिसके बाद स्थिति शांत हुई।

एक संदिग्ध हिरासत में

घटना की सूचना मिलते ही इस्माईलपुर और गोपालपुर थानों की पुलिस के साथ वरिष्ठ अधिकारी मौके पर पहुंचे। पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण किया और जांच शुरू कर दी। परिजनों की निशानदेही पर एक संदिग्ध को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है।

जांच में डॉग स्क्वॉड और तकनीकी अनुसंधान की भी मदद ली जा रही है। पुलिस आपसी रंजिश समेत अन्य संभावित कारणों को ध्यान में रखकर मामले की पड़ताल कर रही है। फिलहाल हत्या के पीछे की वजह स्पष्ट नहीं हो सकी है। पुलिस का कहना है कि जांच पूरी होने के बाद ही वारदात के कारणों और इसमें शामिल अन्य लोगों की भूमिका का खुलासा हो सकेगा।



पटना में मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी राष्ट्रीय एकता दिवस से पहले गुजरात के एकता नगर के लिए पाटलिपुत्र-एकता नगर विशेष ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए।

बिहार एमएलसी चुनाव में कांग्रेस का सूपड़ा साफ, पांचों उम्मीदवार हारे

पटना। बिहार विधान परिषद की शिक्षक और स्नातक निर्वाचन क्षेत्रों की आठ सीटों के चुनाव में कांग्रेस को करारी हार का सामना करना पड़ा। पार्टी ने पांच सीटों पर उम्मीदवार उतारे थे, लेकिन कोई भी जीत दर्ज नहीं कर सका। यहां तक कि कांग्रेस के निवर्तमान विधान पार्षद डॉ. मदन मोहन झा भी दरभंगा शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र से अपनी सीट नहीं बचा सके। उन्हें 324 मतों से हार मिली।

कांग्रेस ने दरभंगा शिक्षक सीट से डॉ. मदन मोहन झा, कोसी स्नातक से मनोज कुमार जायसवाल, दरभंगा स्नातक से रजनीकांत पाठक, पटना शिक्षक से डॉ. संजय यादव और पटना स्नातक से डॉ. असदुल्ला खान को उम्मीदवार बनाया था। इनमें चार प्रत्याशी मुकाबले में भी प्रभावी प्रदर्शन नहीं कर सके। पटना शिक्षक सीट पर डॉ. संजय यादव को महज 21 वोट मिले। पार्टी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अखिलेश प्रसाद सिंह ने हार के बाद स्वीकार किया कि उम्मीदवारों के चयन में चूक हुई। चुनाव में सभी पांच सीटें गंवाने से कांग्रेस की बिहार में संगठनात्मक तैयारी और चुनावी रणनीति पर सवाल उठे हैं।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

एसआईआर पर ...

पूरी हुई। उन्होंने स्पष्ट किया कि पार्टी का विरोध कर्नाटक में एसआईआर से नहीं, बल्कि बिहार, पश्चिम बंगाल और अन्य राज्यों में इसे लागू करने के तरीके से है।

उनके इस बयान को राहुल गांधी के एसआईआर विरोधी रुख से अलग माना जा रहा है। भाजपा ने इसी मुद्दे पर कांग्रेस को घेरते हुए कहा कि जब उसकी अपनी पार्टी के नेता एसआईआर का समर्थन कर रहे हैं, तो राहुल गांधी को 'वोट चोरी' का आरोप लगाना बंद करना चाहिए।

वहीं, कांग्रेस नेता प्रियंक खड़गे ने जारकीहोली के दावों पर सवाल उठाते हुए चित्तपुर में एक बूथ पर 40 लोगों को निशाना बनाए जाने और प्री-प्रिंटेड फॉर्म-7 मिलने का मामला उठाया। इससे मतदाता सूची पुनरीक्षण को लेकर कांग्रेस के भीतर असहमति उजागर हुई है।

पूर्णिया के तालाबों से यूनान तक पहुंचा बिहार का मखाना

जन जन विचार
...✍ पूर्णिया

बिहार के तालाबों और खेतों में पैदा होने वाला मखाना अब सात समंदर पार यूरोप के बाजारों में अपनी पहचान बनाने की ओर बढ़ रहा है। पूर्णिया से एक मीट्रिक टन पॉप्ड मखाना की पहली खेप ग्रीस (यूनान) के लिए रवाना की गई है। यह केवल एक कृषि उत्पाद का निर्यात नहीं, बल्कि बिहार के किसानों और मखाना उद्योग के लिए अंतर्राष्ट्रीय बाजार में अपनी जगह बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) के सहयोग से भेजी गई इस खेप को बिहार के मखाना उत्पादकों को वैश्विक बाजार से जोड़ने की पहल के रूप में देखा जा रहा है। केंद्रीय वाणिज्य मंत्रालय के अनुसार, इस खेप की आपूर्ति पूर्णिया के बेलौरी स्थित इंडो ग्लोबल एक्सपोर्ट ने की है, जबकि निर्यात एसएस फूड्स एक्सपोर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड के माध्यम से किया जा रहा है। मखाना की खेप गुजरात के मुंद्रा बंदरगाह से ग्रीस के पिराएस बंदरगाह पहुंचेगी।



दुनिया के मखाना उत्पादन में बिहार की बड़ी हिस्सेदारी

भारत दुनिया का सबसे बड़ा मखाना उत्पादक देश है और इसमें बिहार की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। देश के कुल मखाना उत्पादन में बिहार की हिस्सेदारी लगभग 80 से 85 प्रतिशत है। राज्य के करीब 10 जिलों में 35 हजार हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में इसकी खेती होती है। हजारों किसान इस पारंपरिक फसल के सहारे अपनी आजीविका चलाते हैं।

मखाना अब केवल स्थानीय बाजारों तक सीमित नहीं है। इसके स्वास्थ्यवर्धक खाद्य पदार्थ के रूप में बढ़ती लोकप्रियता ने अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भी इसकी मांग बढ़ाई है। यही वजह है कि बिहार के मखाना उत्पादकों के लिए निर्यात की संभावनाएं लगातार महत्वपूर्ण होती जा रही हैं।

20 से अधिक देशों तक पहुंचा भारतीय मखाना

कृषि मंत्री विजय कुमार सिन्हा के अनुसार, वित्त वर्ष 2025-26 में भारत ने 7,000 मीट्रिक टन से अधिक मखाना और उससे बने मूल्यवर्धित उत्पादों का निर्यात किया। इनका कुल निर्यात मूल्य लगभग 2.2 करोड़ डॉलर रहा और भारतीय मखाना 20 से अधिक देशों तक पहुंचा।

सरकार का मानना है कि अंतर्राष्ट्रीय बाजारों तक पहुंच बढ़ने से किसानों को घरेलू बाजार की तुलना में बेहतर कीमत मिल सकती है। इससे मखाना उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन से जुड़े रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे।

बिहार सरकार कृषि निर्यात को प्रोत्साहित करने के लिए कृषि निर्यात नीति पर काम कर रही है। मखाना की निर्यात मूल्य श्रृंखला को मजबूत बनाने के लिए राज्य में पैकहाउस भी विकसित किए गए हैं।

राजद की दो सीटों पर वापसी, जन सुराज का खुला खाता

बिहार एमएलसी चुनाव : बदला सियासी समीकरण

जन जन विचार
...✍ पटना

बिहार विधान परिषद की शिक्षक और स्नातक निर्वाचन क्षेत्रों की आठ सीटों के चुनाव परिणाम ने राज्य की राजनीति में नए समीकरणों के संकेत दिए हैं। सत्तारूढ़ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) को तीन सीटों पर जीत मिली, जबकि राष्ट्रीय जनता दल (राजद) ने दो सीटें अपने नाम कीं। प्रशांत किशोर की जन सुराज पार्टी ने पहली बार विधान परिषद में प्रवेश किया। वहीं, दो सीटों पर निर्दलीय प्रत्याशियों ने जीत दर्ज की।

इस चुनाव का सबसे महत्वपूर्ण पहलू शिक्षक निर्वाचन क्षेत्रों में हुआ बदलाव रहा। पटना, दरभंगा, तिरहुत और सारण की चारों शिक्षक सीटों पर निवर्तमान विधान पार्षदों को हार का सामना करना पड़ा। इसके विपरीत, स्नातक निर्वाचन क्षेत्रों में तीन निवर्तमान विधान पार्षद अपनी सीट बचाने में सफल रहे, जबकि दरभंगा स्नातक सीट पर भाजपा को राजद के हाथों हार मिली।

पटना में भाजपा का तीन दशक पुराना दबदबा खत्म

चुनाव का सबसे चर्चित मुकाबला पटना शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र में देखने को मिला। राजद समर्थित डॉ. संजीव कुमार सिंह ने भाजपा के वरिष्ठ नेता और पांच बार विधान पार्षद रह चुके नवल किशोर यादव को 1,057 मतों से पराजित कर दिया। इस जीत के साथ पटना शिक्षक सीट पर भाजपा का लगभग तीन दशक पुराना वर्चस्व समाप्त हो गया।

दरभंगा स्नातक निर्वाचन क्षेत्र में राजद के अनिल कुमार झा ने भाजपा के सर्वेश कुमार को हराकर एक और महत्वपूर्ण जीत दर्ज की। वहीं, दरभंगा शिक्षक सीट पर जन सुराज के डॉ. सुरेश प्रसाद राय ने कांग्रेस के निवर्तमान विधान पार्षद डॉ. मदन मोहन झा को 324 मतों से हराया। यह जीत जन सुराज के लिए खास रही, क्योंकि इसके साथ पार्टी ने विधान परिषद में अपना खाता खोला।

भाजपा और जदयू ने भी बचाई अहम सीटें

एनडीए के लिए तिरहुत शिक्षक और कोसी स्नातक निर्वाचन क्षेत्रों के नतीजे महत्वपूर्ण रहे। भाजपा के नरेंद्र प्रसाद सिंह ने तिरहुत शिक्षक सीट पर निर्दलीय भूषण कुमार झा को 594 मतों से हराया। कोसी स्नातक सीट पर भाजपा के डॉ. एनके यादव ने अपनी जीत का सिलसिला बरकरार रखा। पटना स्नातक निर्वाचन क्षेत्र में जदयू के नीरज कुमार ने लगातार चौथी बार जीत दर्ज की। उन्होंने राजद के दिलीप पटेल को पीछे छोड़ते हुए अपनी सीट बचाई।

निर्दलीयों ने भी दिखाई ताकत

सारण शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र में निर्दलीय डॉ. राहुल राज ने जदयू के आनंद पुष्कर को 1,815 मतों से पराजित किया। राहुल राज को भाजपा का बागी उम्मीदवार भी माना जा रहा था। तिरहुत स्नातक सीट पर निर्दलीय वंशीधर ब्रजवासी ने जदयू के अभिषेक झा को हराकर अपना कब्जा बरकरार रखा।

विधान परिषद में बदलेगा संख्या बल

आठ सीटों के परिणाम से विधान परिषद में दलों की स्थिति में भी बदलाव आया है। राजद की दो सीटों पर जीत से उसका प्रतिनिधित्व बढ़ा है, जबकि जन सुराज को पहली बार सदन में जगह मिली है। दूसरी ओर, कांग्रेस और भाकपा इस चुनाव में अपनी सीटें गंवा बैठीं।

कुल मिलाकर, इन नतीजों ने स्पष्ट किया है कि शिक्षक और स्नातक मतदाताओं के बीच राजनीतिक दलों के पारंपरिक प्रभाव को चुनौती मिल रही है। हालांकि, विधान परिषद के सीमित निर्वाचन क्षेत्रों के परिणामों को पूरे बिहार के जनादेश के रूप में देखना उचित नहीं होगा।

तेजस्वी-प्रशांत साथ आएं तो एनडीए को चुनौती!

रोहिणी आचार्य ने दिया सियासी समीकरण

पटना। बिहार में भाजपा और जनता दल (यूनाइटेड) के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) को चुनौती देने के लिए विपक्षी एकता की नई पहल सामने आई है। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) की नेता रोहिणी आचार्य ने तेजस्वी यादव और जन सुराज के सूत्रधार प्रशांत किशोर को साथ आने की सलाह देते हुए दावा किया है कि दोनों की एकजुटता बिहार की राजनीति में बड़ा बदलाव ला सकती है।

बिहार विधान परिषद की आठ सीटों के चुनाव परिणामों के बाद रोहिणी आचार्य ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर विपक्षी दलों के बीच तालमेल की जरूरत पर जोर दिया। उन्होंने एक सियासी समीकरण भी पेश किया 'TJ+PK=BJP/NDA ZERO' यानी तेजस्वी यादव और प्रशांत किशोर की साझी ताकत से भाजपा-एनडीए को चुनावी मुकाबले में कड़ी चुनौती दी जा सकती है।

रोहिणी आचार्य का तर्क है कि विपक्षी मतों का विभाजन सत्तारूढ़ गठबंधन के लिए फायदेमंद साबित होता है। यदि राजद और जन सुराज अपने मतदाताओं के बीच बेहतर तालमेल कायम कर लें, तो कई सीटों पर चुनावी मुकाबले का परिणाम बदल सकता है। उन्होंने विधान परिषद चुनाव के आंकड़ों का हवाला देते हुए दावा किया कि दोनों दलों के उम्मीदवारों को मिले मत जोड़ने पर एनडीए को कई सीटों पर हार का सामना करना पड़ सकता था। इस सुझाव के पीछे विपक्षी खेमे की एक बड़ी चुनौती भी छिपी है-क्या राजद और जन सुराज अपने अलग-अलग राजनीतिक आधारों को एक साझा रणनीति के तहत ला सकते हैं? तेजस्वी यादव की राजनीति का मुख्य आधार राजद का पारंपरिक सामाजिक समर्थन है, जबकि प्रशांत किशोर ने जन सुराज के माध्यम से बिहार में एक अलग राजनीतिक विकल्प खड़ा करने की कोशिश की है। दोनों के बीच संभावित तालमेल की चर्चा इसलिए अहम है, क्योंकि इससे विपक्षी मतों के बंटवारे और चुनावी समीकरणों पर असर पड़ सकता है।

मुजफ्फरपुर में 500 से अधिक सरकारी शिक्षकों की नौकरी पर संकट

जन जन विचार
...✍ मुजफ्फरपुर

बिहार में 500 से अधिक सरकारी शिक्षकों की नौकरी पर संकट गहरा गया है। शिक्षा विभाग ने 31 मार्च 2015 के बाद नियुक्त अप्रशिक्षित प्रारंभिक शिक्षकों की सेवा समाप्त करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। इस आदेश से जिले के शिक्षा महकमे में हड़कंप मच गया है। खास बात यह है कि बाद में सक्षमता परीक्षा उत्तीर्ण कर विशिष्ट शिक्षक बन चुके अप्रशिक्षित शिक्षक भी इस कार्रवाई के दायरे में होंगे।

जिला कार्यक्रम पदाधिकारी (स्थापना) प्रह्लाद कुमार गुप्ता ने सभी प्रखंड शिक्षा पदाधिकारियों को इस संबंध में आवश्यक निर्देश जारी किए हैं। विभाग ने 31 मार्च 2015 के बाद नियुक्त अप्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति को नियमों के विरुद्ध मानते हुए उनकी सेवा समाप्त करने की कार्रवाई करने को कहा है। साथ ही ऐसे सभी शिक्षकों का पूरा ब्योरा मांगा गया है।

पुराने शिक्षकों को 2028 तक मोहलत

विभाग ने 31 मार्च 2015 से पहले नियमानुसार नियुक्त अप्रशिक्षित प्रारंभिक शिक्षकों को डीएलएड की योग्यता हासिल करने के लिए 31 अगस्त 2028 तक का समय दिया है। इसके बाद उन्हें कोई अतिरिक्त अवसर नहीं मिलेगा। वहीं, निर्धारित तिथि के बाद नियुक्त अप्रशिक्षित शिक्षकों को सेवा में बनाए रखने का प्रावधान नहीं बताया गया है। इस कार्रवाई की खास बात यह है कि सक्षमता परीक्षा पास कर विशिष्ट शिक्षक का दर्जा हासिल कर चुके वैसे शिक्षक भी जांच के दायरे में आएंगे, जिनकी मूल नियुक्ति निर्धारित तिथि के बाद हुई थी और वे अप्रशिक्षित थे।

शिक्षा विभाग के इस निर्देश से शिक्षकों की नियुक्ति और प्रशिक्षण संबंधी नियमों के पालन का मुद्दा एक बार फिर चर्चा में आ गया है।



पटना में विश्वेश्वरैया भवन के बाहर प्रदर्शन करते बीपीएससी सहायक अभियंता (एई) भर्ती परीक्षा के अभ्यर्थी। प्रदर्शनकारी परिणाम शीघ्र घोषित करने और नियुक्ति पत्र जारी करने की मांग कर रहे हैं।

हार्दिक पांड्या का विकल्प बने तीन सितारे, तिलक धीर और रेड्डी ने संभाली टीम इंडिया की कमान

जन जन विचार
...✍ क्राइस्टचर्च





भारतीय क्रिकेट में हार्दिक पांड्या की जगह लेना आसान नहीं है। शीर्ष क्रम में बल्लेबाजी करने के साथ चार ओवर की प्रभावी गेंदबाजी करने वाला खिलाड़ी किसी भी टीम के लिए अनमोल होता है। लेकिन न्यूजीलैंड के खिलाफ टी-20 मुकाबले में भारत को ऐसे तीन युवा खिलाड़ी मिले, जो मिलकर हार्दिक की जिम्मेदारियों का बोझ उठाने की क्षमता दिखा रहे हैं। तिलक वर्मा, नमन धीर और नितीश कुमार रेड्डी ने क्राइस्टचर्च में अपने प्रदर्शन से भारतीय टीम को नई उम्मीद दी है।

न्यूजीलैंड के खिलाफ खेले गए दूसरे टी-20 मुकाबले में भारतीय टीम एक समय गहरे संकट में थी। 181 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए 13वें ओवर तक पांच विकेट पर 86 रन बन चुके थे। जीत की संभावना बेहद कम दिखाई दे रही थी। पिच धीमी थी और गेंद बल्ले पर आसानी से नहीं आ रही थी। ऐसे मुश्किल हालात में तिलक, धीर और रेड्डी ने मोर्चा संभाला और 56 गेंदों में 108 रनों की साझेदारी कर भारत को यादगार जीत दिलाई।

नमन धीर ने बदला मैच का रुख

नमन धीर ने दबाव के बीच आक्रामक बल्लेबाजी का परिचय दिया। न्यूजीलैंड के कप्तान मिचेल सैंटनर ने अपने शुरुआती तीन ओवरों में तीन विकेट लेकर भारतीय बल्लेबाजी को झकझोर दिया था। लेकिन धीर ने उनके खिलाफ छक्का जड़कर मैच का रुख बदलने का संकेत दिया। इससे पहले भी वह पिछले मुकाबले में विजयी रन बनाकर चर्चा में आए थे।

टीम प्रबंधन का भरोसा भी धीर के आत्मविश्वास में दिखाई देता है। कप्तान श्रेयस अय्यर ने उन्हें एक संपूर्ण खिलाड़ी बताया है। उनकी बल्लेबाजी में हार्दिक पांड्या जैसी आक्रामकता की झलक भी नजर आई।

तिलक की सूझबूझ और रेड्डी का दम

तिलक वर्मा ने इस मुकाबले में सिर्फ रन नहीं बनाए, बल्कि परिस्थितियों को समझकर बल्लेबाजी की। तेज गेंदबाजों के खिलाफ उनकी सहजता और मैदान के दोनों ओर शॉट खेलने की क्षमता भारत के लिए अहम साबित हुई। उन्होंने गेंदबाजों की रणनीति को भांपकर अपने शॉट चुने और दबाव को हावी नहीं होने दिया।

वहीं, नितीश कुमार रेड्डी ने बल्लेबाजी के साथ गेंदबाजी में भी योगदान दिया। डेथ ओवरों में उनकी गेंदबाजी पर टीम का भरोसा बढ़ रहा है। बल्लेबाजी के दौरान उन्होंने धीमी गेंदों और यॉर्कर जैसी चुनौतियों का सामना करते हुए महत्वपूर्ण रन जुटाए। 18वें ओवर में उनके और धीर के प्रयासों से भारत को 17 रन मिले, जिसने जीत की राह आसान की।

रेड्डी का मानना है कि ऐसे कठिन मुकाबलों में शांत रहना, गेंदबाज की रणनीति समझना और सही मौके का इंतजार करना जरूरी है। उन्होंने कहा कि खिलाड़ी को आखिरी समय तक विश्वास बनाए रखना चाहिए, क्योंकि मैच का रुख किसी भी क्षण बदल सकता है।

हार्दिक की कमी, तीन खिलाड़ियों की जिम्मेदारी

हार्दिक पांड्या जैसे खिलाड़ी का विकल्प तैयार करना भारतीय क्रिकेट के सामने लंबे समय से चुनौती रहा है। 2023 के एकदिवसीय विश्व कप में उनकी चोट के बाद टीम को अपने संतुलन में बदलाव करना पड़ा था। हालांकि, शिवम दुबे जैसे खिलाड़ियों ने भी अलग-अलग मौकों पर यह जिम्मेदारी संभाली है।

अब तिलक, धीर और रेड्डी के रूप में टीम को तीन ऐसे युवा खिलाड़ी मिल रहे हैं, जिनकी भूमिकाएं एक-दूसरे की पूरक हो सकती हैं। तिलक की बल्लेबाजी, धीर की आक्रामकता और रेड्डी की हरफनमौला क्षमता भारतीय टीम को नया संतुलन दे सकती है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि ये तीनों खिलाड़ी अभी अपने करियर के शुरुआती दौर में हैं। क्राइस्टचर्च की जीत ने साबित किया कि भारतीय क्रिकेट में भविष्य की जिम्मेदारियां उठाने वाले खिलाड़ी तैयार हो रहे हैं। हार्दिक की जगह कोई एक खिलाड़ी ले पाएगा या नहीं, यह भविष्य बताएगा, लेकिन फिलहाल भारत के पास उनकी जिम्मेदारियों को साझा करने वाले तीन मजबूत दावेदार जरूर हैं।

डब्ल्यूपीएल में बढ़ सकती हैं टीमों की संख्या, विस्तार पर मंथन करेगा बीसीसीआई

जन जन विचार
...✍ निई दिल्ली/कोच्चि



महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) में आने वाले वर्षों में टीमों की संख्या बढ़ सकती है। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने लीग के विस्तार और इसमें सुधार की संभावनाओं पर विचार करने की तैयारी शुरू कर दी है। बीसीसीआई सचिव देवजीत सैकिया ने कहा है कि अगले साल से इस संबंध में व्यापक विचार-विमर्श किया जाएगा।

डब्ल्यूपीएल की आधिकारिक वेबसाइट को दिए साक्षात्कार में सैकिया ने कहा कि लीग में नई टीमें शामिल करने के साथ-साथ इसके दूसरे पहलुओं को भी बेहतर बनाने की जरूरत है। इस प्रक्रिया में खिलाड़ियों, प्रशिक्षकों, चयनकर्ताओं और अन्य संबंधित पक्षों की राय ली जाएगी। उन्होंने कहा कि लीग को आगे बढ़ाने के लिए सभी हितधारकों के सुझाव महत्वपूर्ण होंगे।

सैकिया ने डब्ल्यूपीएल की अब तक की प्रगति पर संतोष जताते हुए कहा कि चार वर्षों में इस लीग ने महिला क्रिकेट को नई पहचान दी है। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के बाद डब्ल्यूपीएल फ्रेंचाइजी क्रिकेट की प्रमुख प्रतियोगिताओं में शामिल हो चुकी है। इससे भारतीय महिला क्रिकेट को मजबूती मिली है और नई प्रतिभाओं को अपनी क्षमता दिखाने का मंच मिला है।

गौरतलब है कि वर्ष 2023 में शुरू हुई डब्ल्यूपीएल में फिलहाल पांच टीमें हिस्सा लेती हैं। बीसीसीआई अब इसके अगले चरण में टीमों की संख्या बढ़ाने की संभावनाएं तलाश रहा है।

नीलामी में 25 खिलाड़ियों पर लगी बोली

इस बीच, डब्ल्यूपीएल 2027 के लिए बुधवार को हुई मिनी नीलामी में 25 खिलाड़ियों को खरीदार मिले। कुल 27 उपलब्ध स्थानों के लिए 150 खिलाड़ियों ने पंजीकरण कराया था। खरीदे गए खिलाड़ियों में सात विदेशी और 14 ऐसी खिलाड़ी शामिल हैं, जिन्हें अब तक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खेलने का अवसर नहीं मिला है। 124 खिलाड़ियों को कोई खरीदार नहीं मिला।

ऑस्ट्रेलिया की सोफी मोलिन्यूक्स नीलामी की सबसे महंगी खिलाड़ी रहीं। यूपी वारियर्स ने उन्हें 1.10 करोड़ रुपए में खरीदा। उनका आधार मूल्य 50 लाख रुपए था। वह एक करोड़ रुपए से अधिक कीमत पाने वाली एकमात्र खिलाड़ी रहीं।

डब्ल्यूपीएल 2027 का आयोजन अगले साल जनवरी-फरवरी में प्रस्तावित है। नीलामी में यूपी वारियर्स ने सर्वाधिक आठ खिलाड़ियों को खरीदा। मुंबई इंडियंस ने छह, दिल्ली कैपिटल्स और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने चार-चार, जबकि गुजरात जायंट्स ने तीन खिलाड़ियों को अपनी टीम में शामिल किया।

धनतेरस : धन, आरोग्य और समृद्धि का महापर्व

जन जन विचार
...✍ धर्म डेस्क

कार्तिक कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी के साथ ही दीपावली के पांच दिवसीय उत्सव का आगाज हो जाता है। इसी दिन मनाया जाता है धनतेरस, जिसे धनत्रयोदशी भी कहा जाता है। यह पर्व भारतीय समाज में धन, स्वास्थ्य और सुख-समृद्धि की कामना का प्रतीक है। धनतेरस आते ही बाजारों में रौनक बढ़ जाती है। सोने-चांदी के आभूषणों से लेकर पीतल, तांबे और स्टील के बर्तनों तक की दुकानों पर ग्राहकों की भीड़ दिखाई देने लगती है। वाहन, इलेक्ट्रॉनिक सामान और घरेलू उपयोग की वस्तुओं की खरीदारी भी इस पर्व का हिस्सा बन चुकी है।

लेकिन धनतेरस का महत्व केवल खरीदारी और बाजार की चहल-पहल तक सीमित नहीं है। इसकी जड़ें भारतीय धार्मिक मान्यताओं, आयुर्वेद और लोकपरंपराओं में गहराई तक जुड़ी हैं।



समुद्र मंथन से जुड़ी है परंपरा

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, समुद्र मंथन के दौरान भगवान धन्वंतरि अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे। उन्हें आयुर्वेद और चिकित्सा का देवता माना जाता है। इसी मान्यता के कारण धनतेरस को भगवान धन्वंतरि की जयंती के रूप में भी मनाया जाता है। इस दिन उनकी पूजा-अर्चना कर लोग परिवार के आरोग्य और दीर्घायु की कामना करते हैं।

धनतेरस का यह धार्मिक पक्ष एक महत्वपूर्ण संदेश देता है कि जीवन में स्वास्थ्य सबसे बड़ी पूंजी है। धन-संपत्ति का वास्तविक सुख तभी संभव है, जब मनुष्य स्वस्थ हो। इसीलिए इस पर्व में धन की आराधना के साथ आरोग्य को भी विशेष स्थान दिया गया है।

सोना-चांदी खरीदने की परंपरा का आकर्षण

धनतेरस पर सोना, चांदी और नए बर्तन खरीदना शुभ माना जाता है। मान्यता है कि इस दिन घर में नई वस्तु लाने से सुख-समृद्धि का आगमन होता है। इसी विश्वास ने धनतेरस को देश के सबसे बड़े खरीदारी पर्वों में शामिल कर दिया है। समय के साथ खरीदारी का स्वरूप भी बदला है। पहले जहां लोग मुख्य रूप से पीतल, तांबे और चांदी के बर्तन खरीदते थे, वहीं अब आभूषणों के अलावा वाहन, मोबाइल फोन, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण और घरेलू सामान की खरीदारी भी खूब होती है। ऑनलाइन बाजार के विस्तार ने भी इस परंपरा को नया आयाम दिया है। धनतेरस अब कारोबारियों और खुदरा व्यापारियों के लिए भी महत्वपूर्ण अवसर बन गया है। हालांकि, त्योहार का उद्देश्य आर्थिक दिखावा नहीं, बल्कि शुभ शुरुआत और समृद्धि की कामना है। अपनी सामर्थ्य के अनुसार की गई खरीदारी भी इस परंपरा का हिस्सा है।

यम दीपदान की विशेष मान्यता

धनतेरस की शाम घर के मुख्य द्वार पर दीप जलाने की परंपरा है। इसे यम दीपदान कहा जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार, इस दिन दक्षिण दिशा में दीप जलाकर भगवान यमराज से परिवार की सुख-शांति और अकाल मृत्यु से रक्षा की प्रार्थना की जाती है। यह परंपरा जीवन के प्रति सम्मान और परिवार की मंगलकामना का प्रतीक है।

बाजार से आगे भी है धनतेरस का संदेश

आज के उपभोक्तावादी दौर में धनतेरस का उत्सव काफी हद तक खरीदारी और बाजार की चमक से जुड़ गया है। विज्ञापनों और विशेष छूट के बीच त्योहार का मूल संदेश कहीं पीछे छूटता दिखाई देता है। जबकि भारतीय परंपरा में समृद्धि का अर्थ केवल धन-संपत्ति अर्जित करना नहीं, बल्कि स्वस्थ परिवार, सुरक्षित जीवन, सामाजिक सद्भाव और संतोष भी है।

धनतेरस हमें याद दिलाता है कि धन तभी सार्थक है, जब उसका उपयोग जीवन को बेहतर बनाने और दूसरों के काम आने में हो। सोना-चांदी की चमक कुछ समय के लिए आकर्षित कर सकती है, लेकिन स्वास्थ्य, पारिवारिक प्रेम और आपसी विश्वास ही स्थायी समृद्धि की असली पहचान हैं।

'रामायणम' का बड़ा दांव : जियोहॉटस्टार पर अलग से खरीदकर देख सकेंगे फिल्म

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

भारतीय महाकाव्य रामायण अब बड़े पर्दे से आगे डिजिटल मनोरंजन की दुनिया में भी एक नया अध्याय लिखने जा रहा है। निर्माता नमित मल्होत्रा की बहुप्रतीक्षित फिल्म 'रामायणम् पार्ट वन' को लेकर जियोहॉटस्टार और प्राइम फोकस स्टूडियोज ने साझेदारी की घोषणा की है। फिल्म सिनेमाघरों में प्रदर्शन के बाद जियोहॉटस्टार पर उपलब्ध होगी, लेकिन दर्शकों को इसे देखने के लिए सामान्य सदस्यता के बजाय अलग से भुगतान करना होगा। यह मंच पर पहली बार शुरू की जा रही पे-पर-व्यू सुविधा होगी।

फिल्म 5 नवंबर 2026 को दिवाली के अवसर पर दुनियाभर के सिनेमाघरों में रिलीज होगी। इसे हिंदी, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम और अंग्रेजी में प्रदर्शित किया जाएगा। फिल्म को आईमैक्स 3डी सहित प्रीमियम सिनेमाई प्रारूपों में भी रिलीज करने की तैयारी है। हालांकि, जियोहॉटस्टार पर इसके आने की निश्चित तारीख और अलग से देखने के लिए चुकाई जाने वाली राशि की घोषणा अभी नहीं हुई है।

नीता अंबानी ने बताया सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाने का अवसर

जियोस्टार की चेयरपर्सन नीता एम. अंबानी ने इस साझेदारी को भारतीय सांस्कृतिक विरासत को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने का अवसर बताया। उनके मुताबिक, रामायण सदियों से भारतीय समाज की चेतना, कल्पना और जीवन-मूल्यों को प्रभावित करती रही है। उन्होंने कहा कि इस महाकाव्य की भव्य सिनेमाई प्रस्तुति को देशभर के परिवारों तक पहुंचाना उनके लिए सौभाग्य की बात है।

नीता अंबानी ने यह भी कहा कि तकनीक के माध्यम से बेहतरीन कहानियों को हर भारतीय तक पहुंचाने का लक्ष्य है। इस पहल से नई पीढ़ी को कर्तव्य, प्रेम, साहस और अच्छाई जैसे मूल्यों से जोड़ने का अवसर मिलेगा।

नमित मल्होत्रा की नजर बड़े पर्दे से हर घर तक

फिल्म के निर्माता नमित मल्होत्रा का मानना है कि रामायण जैसी कहानी का अनुभव सबसे बड़ी स्क्रीन पर, खासकर आईमैक्स 3डी में किया जाना चाहिए। लेकिन भारत में सिनेमाघरों का ढांचा अभी हर उस दर्शक तक नहीं पहुंच पाता, जो इस महाकाव्य को देखना चाहता है। इसी वजह से सिनेमाघरों में प्रदर्शन के बाद डिजिटल मंच पर फिल्म उपलब्ध कराने की योजना बनाई गई है।

मल्होत्रा के अनुसार, रामायण हर भारतीय की सांस्कृतिक विरासत है और इसे अधिक व्यापक दर्शक-वर्ग तक पहुंचाने के लिए जियोहॉटस्टार स्वाभाविक साझेदार है। डिजिटल माध्यम से ऐसे दर्शक भी फिल्म देख सकेंगे, जिनके लिए सिनेमाघर तक पहुंचना आसान नहीं है।

सितारों और अंतर्राष्ट्रीय तकनीकी टीम का संगम

नितेश तिवारी के निर्देशन में बन रही 'रामायणम' दो भागों वाली लाइव-एक्शन फिल्म श्रृंखला है। इसकी कहानी श्रीधर राघवन ने वाल्मीकि रामायण पर आधारित होकर तैयार की है। निर्माण में प्राइम फोकस स्टूडियोज के साथ दृश्य प्रभावों के लिए चर्चित डीएनईजी और यश की मॉन्स्टर माइंड क्रिएशंस शामिल हैं।

फिल्म में रणबीर कपूर भगवान राम, साई पल्लवी सीता, यश रावण, सनी देओल हनुमान और रवि दुबे लक्ष्मण की भूमिका निभाएंगे। अरुण गोविल, लारा दत्ता, रकुल प्रीत सिंह, विवेक ओबेरॉय, कुणाल कपूर और काजल अग्रवाल भी अहम भूमिकाओं में दिखाई देंगे। संगीत की जिम्मेदारी ऑस्कर विजेता संगीतकार हंस जिमर और ए.आर. रहमान ने संभाली है।



ৰাইজৰ কথা ৰাইজৰ মাজলৈ

সাপ্তাহিক

জন জন বিচাৰ

Guwahati, 30 October, 2026 Friday :: শুক্রবাৰ, কাতি, কৃষ্ণ পক্ষ, পঞ্চমী, শকাব্দ ১৯৪৮



জুবিন গার্গৰ ন্যায় বিচাৰি ৰাজ্যপালৰ দ্বাৰস্থ পৰিয়াল

জন জন বিচাৰ
...✍ গুৱাহাটী



অসমীয়া সংগীত জগতৰ প্রয়াত জনপ্রিয় শিল্পী জুবিন গার্গৰ মৃত্যুৰ গোচৰত ন্যায় বিচাৰি এইবাৰ ৰাজ্যপাল লক্ষ্মণ প্রসাদ আচার্যৰ কায চাপিছে শিল্পীগৰাকীৰ পৰিয়াল। জুবিনৰ পত্নী গৰিমা শইকীয়া গার্গ আৰু ভগ্নী পামেলী বৰঠাকুৰে ২৮ অক্টোবৰত লোকভৱনত ৰাজ্যপালক সাক্ষাৎ কৰি গোচৰটোৰ ক্ষিপ্র বিচাৰ, অভিযুক্তসকলৰ জামিনৰ বিৰোধিতা আৰু তদন্তৰ ভিত্তিত দোষী সাব্যস্ত কৰাৰ বাবে ফলপ্রসূ আইনী পদক্ষেপ গ্রহণৰ দাবীৰে এখন স্মাৰক-পত্র প্রদান কৰে।

গুৱাহাটী উচ্চ ন্যায়ালয়ে দুগৰাকী অভিযুক্তক জামিন প্রদান কৰাক লৈ পৰিয়ালটোৱে গভীৰ উদ্বেগ প্রকাশ কৰিছে। ন্যায়পালিকাৰ স্বাধীনতাৰ প্রতি সন্মান জনাই পৰিয়ালটোৱে কয় যে, জামিনৰ নির্দেশক প্রত্যাহ্বান জনোৱাৰ পর্যাপ্ত আইনী ভিত্তি থাকিলে ৰাজ্য চৰকাৰে উচ্চতৰ আদালতৰ দ্বাৰস্থ হ'ব লাগে। অসম চৰকাৰে শেহতীয়া জামিনৰ নির্দেশৰ বিৰুদ্ধে উচ্চতম ন্যায়ালয়ত আবেদন জনোৱাৰ কথা প্রকাশ কৰিছিল বুলি স্মাৰক-পত্রত উল্লেখ কৰি পৰিয়ালটোৱে সেই সিদ্ধান্ত শীঘ্রে কার্যকৰী কৰাৰ আহ্বান জনায়।

তিনিখন আদালতৰ গোচৰ পৰিচালনাৰ বাবে সমন্বিত ব্যৱস্থাৰ দাবী

পৰিয়ালটোৱে গোচৰটোৰ বিচাৰ প্রক্রিয়া ক্ষিপ্র আৰু সুশৃংখল কৰাৰ বাবে অসম চৰকাৰৰ মহাধিবক্তাৰ অধীনত এক সমন্বিত আইনী ব্যৱস্থা গঢ়ি তোলাৰ প্রস্তাৱ আগবঢ়ায়। এই ব্যৱস্থাই নির্দিষ্ট দ্রুত বিচাৰ আদালত, গুৱাহাটী উচ্চ ন্যায়ালয় আৰু উচ্চতম ন্যায়ালয়ত চলি থকা গোচৰৰ অগ্রগতি নিৰীক্ষণ কৰাৰ লগতে তদন্তকাৰী সংস্থা আৰু চৰকাৰী অধিবক্তাসকলৰ মাজত সমন্বয় নিশ্চিত কৰিব লাগে বুলি পৰিয়ালটোৱে মত প্রকাশ কৰে।

স্মাৰক-পত্রত তথ্যগত নথি-পত্র, ফৰেনছিক পৰীক্ষাৰ তথ্য আৰু ডিজিটেল প্রমাণ আদালতত ফলপ্রসূভাৱে উপস্থাপন কৰাৰ ওপৰতো গুৰুত্ব আৰোপ কৰা হৈছে। একে সময়তে সাক্ষীসকলৰ সুৰক্ষা নিশ্চিত কৰা আৰু প্রমাণ নষ্ট কৰা বা প্রমাণৰ সৈতে হস্তক্ষেপ কৰাৰ যিকোনো সম্ভাবনা বোধ কৰিবলৈ চৰকাৰক ব্যৱস্থা গ্রহণৰ আহ্বান জনোৱা হৈছে।

শ্যামকানু মহন্ত আৰু সিদ্ধার্থ শর্মাৰ জামিনৰ বিৰোধিতাৰ আহ্বান

উত্তৰ-পূব ভাৰত মহোৎসৱৰ মুখ্য আয়োজক শ্যামকানু মহন্ত আৰু জুবিনৰ পৰিচালক সিদ্ধার্থ শর্মাৰ জামিন আবেদনৰ বিষয়টোতো পৰিয়ালটোৱে বিশেষ উদ্বেগ প্রকাশ কৰিছে। গোচৰটোৰ গুৰুতৰ অভিযোগসমূহৰ প্রতি লক্ষ্য ৰাখি তেওঁলোকৰ জামিনৰ বিৰোধিতা কৰিবলৈ আৰু ইতিমধ্যে প্রদান কৰা জামিনৰ নির্দেশৰ বিৰুদ্ধে পলম নকৰাকৈ আইনী পদক্ষেপ ল'বলৈ চৰকাৰক আহ্বান জনোৱা হৈছে।

জুবিনৰ মৃত্যুৰ ঘটনাৰ তদন্তৰ বাবে অসম আৰক্ষীৰ অপৰাধ অনুসন্ধান বিভাগে (চিআইডি) বিশেষ তদন্তকাৰী দল (এছআইটি) গঠন কৰিছিল। ৰাজ্যজুৰি ৬০টাতকৈ অধিক এজাহাৰ দাখিল হোৱাৰ পাছত তদন্ত আগবঢ়োৱা হয় আৰু এছআইটিয়ে অভিযোগনামা দাখিল কৰিছে বুলি প্রতিবেদনত উল্লেখ কৰা হৈছে।

গোচৰটোত শ্যামকানু মহন্ত, সিদ্ধার্থ শর্মা, সংগীত শিল্পী শেখৰজ্যোতি গোস্বামী, অমৃতপ্রভা মহন্ত, জুবিনৰ সম্পর্কীয় ভাতৃ তথা নিলস্বিত আৰক্ষী বিষয়া সন্দীপন গার্গ আৰু দুগৰাকী ব্যক্তিগত নিৰাপত্তাৰক্ষী নন্দেশ্বৰ বৰা আৰু পৰেশ বৈশ্যৰ নাম অভিযুক্ত হিচাপে উল্লেখ কৰা হৈছে। তেওঁলোকৰ বিৰুদ্ধে বিভিন্ন ধাৰাত অভিযোগ উত্থাপন কৰা হৈছে। অৱশ্যে অভিযোগ উত্থাপন হোৱাটোৱেই অপৰাধ প্রমাণিত হোৱা বুজায় নে-সেয়া বিচাৰ প্রক্রিয়াৰ জৰিয়তেহে নির্ধাৰিত হ'ব।

আর্থিক অনিয়মৰ অভিযোগৰো তদন্ত বিচাৰিলে পৰিয়ালে

স্মাৰক-পত্রত অভিযুক্তসকলৰ সৈতে জড়িত বুলি প্রকাশ পোৱা কিছুমান আর্থিক অনিয়ম আৰু সন্দেহজনক কার্যকলাপৰ অভিযোগৰো পূর্ণাংগ তদন্ত বিচৰা হৈছে। ইয়াৰ ভিতৰত চৰকাৰী বিভাগৰ মোহৰ, একাধিক স্থায়ী হিচাপ নম্বৰ (পেন কার্ড) উদ্ধাৰ হোৱাৰ দাবী, জুবিনৰ উপার্জনৰ ধন আত্মসাৎ আৰু ধনৰ অপব্যৱহাৰৰ অভিযোগৰ কথা উল্লেখ কৰা হৈছে। এই অভিযোগসমূহৰ সত্যতা তদন্ত আৰু আইনী প্রক্রিয়াৰ জৰিয়তে নির্ধাৰণ হ'ব লাগিব।

পৰিয়ালটোৱে স্পষ্ট কৰি দিয়ে যে তেওঁলোকৰ এই আবেদন কোনো ব্যক্তি বা প্রতিষ্ঠানৰ বিৰুদ্ধে নহয় আৰু ন্যায়পালিকাৰ স্বাধীন কাম-কাজত হস্তক্ষেপ কৰাৰ উদ্দেশ্যও ইয়াৰ নাই। জুবিনৰ বাবে ন্যায়ৰ দাবী ৰাজনৈতিক মতভেদৰ ঊর্ধ্বত থাকি সত্য, ন্যায়সংগত বিচাৰ আৰু আইনৰ শাসনৰ প্রতি সকলোৱে উমৈহতীয়া দায়বদ্ধতা হোৱা উচিত বুলিও স্মাৰক-পত্রত উল্লেখ কৰা হৈছে। সমর্থকসকলকো শান্তিপূর্ণ আৰু মর্যাদাপূর্ণভাৱে ন্যায়ৰ দাবী জনাবলৈ আহ্বান জনোৱা হৈছে।

উল্লেখযোগ্য যে ২০২৫ চনৰ ১৯ ছেপ্টেম্বৰত ছিংগাপুৰত সাগৰত সাঁতুৰি থকা অৱস্থাত জুবিন গার্গৰ মৃত্যু হৈছিল। তেওঁ উত্তৰ-পূব ভাৰত মহোৎসৱৰ চতুর্থ সংস্কৰণত অংশগ্রহণ কৰিবলৈ ছিংগাপুৰলৈ গৈছিল। ছিংগাপুৰ আৰক্ষীৰ পৃথক তদন্ত আৰু কৰ্নাৰ আদালতে প্রকাশ কৰা সিদ্ধান্ত অনুসৰি ঘটনাটোত আনৰ অপকর্মৰ প্রমাণ পোৱা নগ'ল আৰু সুৰাপানৰ ফলত গুৰুতৰভাৱে নিচাগ্রস্ত অৱস্থাত জীৱনৰক্ষক জেকেট ল'বলৈ অস্বীকাৰ কৰাৰ পাছত তেওঁ পানীত ডুব গৈ মৃত্যুবৰণ কৰিছিল বুলি সিদ্ধান্তত উল্লেখ কৰা হৈছিল।

আনহাতে, অসমত চলি থকা গোচৰটোৰ আইনী প্রক্রিয়া অব্যাহত আছে। এতিয়া পৰিয়ালৰ মূল দাবী-তদন্তত সংগৃহীত প্রমাণৰ যথাযথ উপস্থাপন, সাক্ষীৰ সুৰক্ষা আৰু কোনো অপ্রয়োজনীয় পলম নকৰাকৈ ন্যায়িক প্রক্রিয়া সম্পূর্ণ কৰা। জুবিনৰ মৃত্যুৰ ৰহস্য আৰু গোচৰটোৰ পৰিণতিৰ প্রতি ৰাজ্যবাসীৰ দৃষ্টি নিবদ্ধ হৈ থকাৰ সময়তে পৰিয়ালৰ এই আবেদনই ক্ষিপ্র, স্বচ্ছ আৰু ন্যায়সংগত বিচাৰৰ দাবীক পুনৰ চর্চালৈ আনিছে।

ডিমা হাছাওত নতুন প্রজাতিৰ গেকো আৱিষ্কাৰ

জন জন বিচাৰ
...✍ গুৱাহাটী



অসমৰ ডিমা হাছাও জিলাৰ উম�ৰাংছু'ৰ শিলাময় অঞ্চলত নতুন প্রজাতিৰ গেকো (এবিধ জেঠীজাতীয় সৰীসৃপ) আৱিষ্কাৰ কৰিছে মিজোৰাম বিশ্ববিদ্যালয়ৰ গৱেষকৰ এটা দলে। নতুনকৈ চিনাক্ত কৰা প্রজাতিটোৰ নাম ৰখা হৈছে Cyrtodactylus diamensis। এই আৱিষ্কাৰে উত্তৰ-পূর্বাঞ্চলৰ জৈৱ-বৈচিত্র্যৰ সমৃদ্ধি আৰু এতিয়াও অনাৱিষ্কৃত হৈ থকা বন্যপ্রাণীৰ সম্ভাৱনীয়তাক পুনৰ উন্মোচিত কৰিছে।

অসমৰ বন আৰু জলবায়ু পৰিবর্তন মন্ত্রী জয়ন্ত মল্ল বৰুৱাই ২৯ অক্টোবৰত সামাজিক মাধ্যমযোগে এই তথ্য প্রকাশ কৰে। তেওঁ জানিবলৈ দিয়া মতে, নতুন প্রজাতিটোৰ আৱিষ্কাৰ সম্পর্কীয় গৱেষণা প্রতিবেদন Journal of Threatened Taxa নামৰ বিজ্ঞান আলোচনীত প্রকাশ পাইছে।

এই গৱেষণাত মিজোৰাম বিশ্ববিদ্যালয়ৰ ক্রিজোটিয়া থাওচেন, মাথিপি ভেইৰেইৰেইলাই, মাৰা ডুৰা জ্বিচো আৰু ৰ্মাৰ ফ্লাউটে জড়িত আছিল। গৱেষকসকলে ২০২৫ চনৰ আগষ্ট আৰু ২০২৬ চনৰ জুলাই মাহত ক্ষেত্রভিত্তিক অনুসন্ধান চলাইছিল। মুঠ সাত নিশাৰ জৰীপৰ সময়ত উমৰাংছু'ৰ শিলাময় অঞ্চলকে ধৰি বিভিন্ন ক্ষুদ্র প্রাকৃতিক বাসস্থানৰ পৰা নমুনা সংগ্রহ কৰা হৈছিল।

সংগৃহীত নমুনাৰ শাৰীৰিক গঠন আৰু জিনীয় বৈশিষ্ট্য বিশ্লেষণ কৰি গৱেষকসকলে ইয়াক এক সুকীয়া প্রজাতি হিচাপে চিনাক্ত কৰে। গৱেষণা অনুসৰি, নতুন প্রজাতিটোৰ সৈতে Cyrtodactylus arunachalensisৰ ঘনিষ্ঠ সম্পর্ক আছে যদিও জিনীয় গঠন আৰু শাৰীৰিক বৈশিষ্ট্যৰ ক্ষেত্রত দুয়োটাৰ মাজত স্পষ্ট পার্থক্য আছে।

মন্ত্রী বৰুৱাই কয় যে ডিমা হাছাওৰ শিলাময় প্রাকৃতিক পৰিৱেশত এনে বহু বিশেষ প্রজাতিৰ বন্যপ্রাণী থাকিব পাৰে, যিবোৰৰ বিষয়ে এতিয়াও বৈজ্ঞানিকভাৱে জানিব পৰা হোৱা নাই। এই আৱিষ্কাৰে অঞ্চলটোৰ জৈৱ-বৈচিত্র্যৰ ওপৰত অধিক গৱেষণা, প্রাকৃতিক বাসস্থানৰ সংৰক্ষণ আৰু বিজ্ঞানীসকলৰ মাজত সহযোগিতাৰ প্রয়োজনীয়তা প্রতিপন্ন কৰিছে।

উল্লেখযোগ্য যে এই আৱিষ্কাৰে অসমৰ লগতে সমগ্র উত্তৰ-পূর্বাঞ্চলৰ সৰীসৃপৰ বৈচিত্র্য সম্পর্কীয় বৈজ্ঞানিক জ্ঞানৰ পৰিসৰ বৃদ্ধি কৰিলে।

৫ দশক ধৰি অসমক সুৰক্ষা দি আহিছে আলফাই, মন্ত্রী বিশ্বজিৎ দৈমাৰীৰ মন্তব্য

জন জন বিচাৰ
...✍ তিনিচুকীয়া

সংযুক্ত মুক্তি বাহিনী, অসম (আলফা)ক লৈ এক তাৎপর্যপূর্ণ মন্তব্য কৰিছে অসমৰ মন্ত্রী বিশ্বজিৎ দৈমাৰীয়ে। আলফাই বিগত ৫০ বছৰ ধৰি অসমক সুৰক্ষা দি আহিছে বুলি দাবী কৰাৰ লগতে সংগঠনটোৰ মূল নেতৃত্ব গঢ়ি তোলাত মৰাণ-মটক জনগোষ্ঠীৰ গুৰুত্বপূর্ণ ভূমিকা আছে বুলি তেওঁ মন্তব্য কৰে।

তিনিচুকীয়া জিলাৰ অসম-অৰুণাচল প্রদেশ সীমান্তৰ সমীপৱর্তী কাকপথাৰৰ দিৱাক নৰজ্যোতি গাঁৱত অনুষ্ঠিত মটক যুৱ-ছাত্র সম্মিলনৰ কেন্দ্রীয় প্রতিষ্ঠা দিৱসৰ অনুষ্ঠানত ভাষণ দি মন্ত্রীগৰাকীয়ে এই মন্তব্য কৰে। অনুষ্ঠানত তেওঁক 'ৰেংমৰা সমন্বয় বঁটা' প্রদান কৰি সম্মানিত কৰা হয়।

মৰাণ-মটক জনগোষ্ঠীৰ অৱদানৰ কথা উল্লেখ কৰি দৈমাৰীয়ে কয়, "আলফাৰ বাবেই কোনেও অসমৰ গাত হাত দিব পৰা



নাই।"

তেওঁ লগতে দাবী কৰে যে আলফাৰ মূল নেতৃত্ব প্রদান কৰা লোকসকল মৰাণ-মটক জনগোষ্ঠীৰ আছিল। সংগঠনটোৰ মুখ্য সেনাধ্যক্ষ পৰেশ বৰুৱাৰ প্রসংগ উল্লেখ কৰি তেওঁ কয় যে পৰেশ বৰুৱা মটক জনগোষ্ঠীৰ লোক।

মন্ত্রীগৰাকীয়ে আৰু কয় যে বিগত ৫০ বছৰত মৰাণ-মটক জনগোষ্ঠীৰ অৱদান নথকা হ'লে অসমৰ পৰিস্থিতি কেনে হ'লহেঁতেন, সেয়া কেৱল ঈশ্বৰেহে জানে। তেওঁৰ মতে, বিগত পাঁচটা দশকত আলফা এনে এক শক্তি হিচাপে থাকি আহিছে, যাক আন শক্তিয়ে সহজে লৰচৰ কৰিব পৰা নাই।

মৰাণ-মটক জনগোষ্ঠীৰ সৈতে থকা সম্পর্ক আৰু অৱদানৰ স্বীকৃতি হিচাপেই আয়োজিত অনুষ্ঠানত মন্ত্রীগৰাকীক সম্মানিত কৰা হয়।

মন্ত্রীগৰাকীৰ এই মন্তব্যই আলফাৰ ভূমিকা আৰু মৰাণ-মটক জনগোষ্ঠীৰ অৱদানক লৈ নতুনকৈ চর্চাৰ সৃষ্টি কৰিছে। অৱশ্যে আলফাৰ ভূমিকা সম্পর্কে কৰা মন্তব্যসমূহ মন্ত্রীগৰাকীৰ ব্যক্তিগত মূল্যায়ন হিচাপেহে বিবেচিত হ'ব।

বিপাঙত মন্ত্রী বিশ্বজিৎ দৈমাৰী, বিৰোধীৰ প্রশ্নবাণ

গুৱাহাটী : নিষিদ্ধ বিদ্রোহী সংগঠন আলফাক অসমৰ সুৰক্ষাৰ ক্ষেত্রত গুৰুত্বপূর্ণ শক্তি হিচাপে অভিহিত কৰি ৰাজ্যৰ কেবিনেট মন্ত্রী বিশ্বজিৎ দৈমাৰীয়ে কৰা মন্তব্যক কেন্দ্র কৰি ৰাজ্যৰ ৰাজনীতিত তীব্র প্রতিক্রিয়াৰ সৃষ্টি হৈছে। মন্ত্রীগৰাকীৰ বক্তব্যক লৈ প্রদেশ কংগ্রেছে কেন্দ্রীয় গৃহমন্ত্রী অমিত শাহৰ হস্তক্ষেপ দাবী কৰাৰ লগতে চৰকাৰৰ স্থিতি স্পষ্ট কৰিবলৈ আহ্বান জনাইছে।

এই মন্তব্যৰ পিছতে প্রদেশ কংগ্রেছৰ নেত্রী মীৰা বৰঠাকুৰ গোস্বামীয়ে প্রতিক্রিয়া প্রকাশ কৰি প্রশ্ন কৰে যে নিষিদ্ধ সংগঠন এটাক এগৰাকী কেবিনেট মন্ত্রীয়ে ৰাজহুৱাভাৱে প্রশংসা কৰাৰ দায়িত্ব কোনে লৰ? তেওঁৰ মতে, এনে বক্তব্যই যুৱ প্রজন্মৰ মাজত কি বার্তা প্রেৰণ কৰিব, সেয়া চৰকাৰে স্পষ্ট কৰা উচিত। তেওঁ এই সন্দর্ভত কেন্দ্রীয় গৃহমন্ত্রী অমিত শাহলৈ পত্র প্রেৰণ কৰি মন্ত্রীগৰাকীৰ বক্তব্যৰ ব্যাখ্যা বিচৰাৰ লগতে চৰকাৰৰ স্থিতি জানিবলৈ দাবী জনায়।

ইফালে, বিৰোধী দলপতি দেৱব্রত শইকীয়ায়ো বিষয়টো কেন্দ্রীয় গৃহ মন্ত্রালয়ৰ দৃষ্টিগোচৰ কৰিছে। ২৯ অক্টোবৰত কেন্দ্রীয় গৃহ সচিবলৈ প্রেৰণ কৰা পত্রত তেওঁ মুখ্যমন্ত্রী হিমন্ত বিশ্ব শর্মা আৰু মন্ত্রী দৈমাৰীৰ আলফা সম্পর্কীয় বক্তব্যৰ নিৰপেক্ষ পৰীক্ষাৰ দাবী জনায়। সাধাৰণ নাগৰিকৰ ক্ষেত্রত বেআইনী কার্যকলাপ প্রতিৰোধ আইন প্রয়োগ আৰু ৰাজনৈতিকভাৱে ক্ষমতাশালী ব্যক্তিৰ বক্তব্যৰ ক্ষেত্রত আইনৰ প্রয়োগৰ মাজত একে মানদণ্ড থকা উচিত বুলিও তেওঁ প্রশ্ন উত্থাপন কৰে।

ডালিম খানিকৰ চাহ বাগিচাত সামাজিক সুৰক্ষা আঁচনিৰ সজাগতা অভিযান



জন জন বিচাৰ
...✍ নয়নমণি ফুকন, নাজিৰা

যোৰহাট জিলাৰ ইষ্ট যোৰহাট উন্নয়ন খণ্ডৰ অন্তর্গত ১২ নং লাহিং গাঁও পঞ্চায়তৰ ডালিম খানিকৰ চাহ বাগিচাত সামাজিক সুৰক্ষা আঁচনিসমূহৰ বিষয়ে জনসজাগতা সৃষ্টিৰ উদ্দেশ্যে এক বিশেষ অভিযান অনুষ্ঠিত হয়। NEAID-ৰ যোৰহাট শাখাৰ উদ্যোগত আৰু ৰচনং লাহিং গাঁও পঞ্চায়তৰ সহযোগত অনুষ্ঠিত এই অভিযানত চুবুৰীয়া গাঁওসমূহৰ মহিলাসহ ১৮০ৰো অধিক লোকে অংশগ্রহণ কৰে।

অনুষ্ঠানত গাঁও পঞ্চায়তৰ সভাপতি-সম্পাদক, জিলা পৰিষদৰ সদস্যৰ প্রতিনিধি, চাহ বাগিচাৰ উপ-পৰিচালক আৰু কল্যাণ বিষয়া, স্বাস্থ্য বিভাগৰ কর্মচাৰী, শিক্ষক-শিক্ষয়িত্রী, সমাজকর্মী, আশা কর্মী আৰু আত্মসহায়ক গোটৰ নেত্রীসকল উপস্থিত থাকে। তেওঁলোকে নিজ নিজ বিভাগৰ অধীনত উপলব্ধ চৰকাৰী আঁচনি আৰু সা-সুবিধাসমূহৰ বিষয়ে ৰাইজক অৱগত কৰে।

অভিযানত প্রধানমন্ত্রী জন আৰোগ্য যোজনা, জননী সুৰক্ষা যোজনা, মজুৰি ক্ষতিপূৰণ আঁচনি, অৰুণোদয় আঁচনি, বিভিন্ন পেঞ্চন আঁচনি, ৰাষ্ট্রীয় খাদ্য সুৰক্ষা আইন আৰু অসম অট্টালিকা তথা অন্যান্য নির্মাণ শ্রমিক কল্যাণ পৰিষদৰ অধীনত উপলব্ধ সুবিধাসমূহৰ বিষয়ে আলোচনা কৰা হয়। আঁচনিসমূহৰ সুবিধা লাভৰ যোগ্যতা, আবেদন পদ্ধতি আৰু হিতাধিকাৰীসকলে সম্মুখীন হোৱা সমস্যাসমূহৰ বিষয়েও বিতংভাৱে বুজাই দিয়া হয়।

অনুষ্ঠানত সামাজিক সুৰক্ষাৰ সৈতে শিশু সুৰক্ষাৰ সম্পর্কৰ ওপৰতো বিশেষ গুৰুত্ব আৰোপ কৰা হয়। চৰকাৰী কল্যাণমূলক আঁচনিৰ সুবিধা লাভৰ জৰিয়তে আর্থিকভাৱে দুর্বল পৰিয়ালসমূহৰ অসুবিধা হ্রাস কৰাৰ লগতে শিশুৰ শিক্ষা, স্বাস্থ্য আৰু পুষ্টি নিশ্চিত কৰাত সহায় হ'ব পাৰে বুলি উল্লেখ কৰা হয়। লগতে শিশুশ্রম, শিশু শোষণ আৰু অন্যান্য বিপদৰ পৰা শিশুসকলক সুৰক্ষা দিয়াৰ ক্ষেত্রত পৰিয়াল তথা সমাজৰ দায়িত্বৰ বিষয়ে সজাগ কৰা হয়। বিপদাপন্ন পৰিয়ালসমূহক উপযুক্ত চৰকাৰী আঁচনি আৰু শিশু সুৰক্ষা সেৱাৰ সৈতে সংযুক্ত কৰাৰ প্রয়োজনীয়তাও দাঙি ধৰা হয়। উল্লেখ্য যে, শিশুৰ প্রতি সম্ভাব্য বিপদ প্রতিৰোধ আৰু শিশু সুৰক্ষা ব্যৱস্থা শক্তিশালী কৰাৰ লক্ষ্যৰে ৰূপায়ণ কৰা কৰচ কার্যসূচীৰ অধীনত এই অভিযান অনুষ্ঠিত কৰা হয়।

এই সপ্তাহৰ ৰাশিফল

৩০ অক্টোবৰ ২০২৬ৰ পৰা ৫ন ২০২৬ লৈ

মেষ : চেষ্টাৰ সফলতা অর্জন। ধর্মীয় কার্য্যৰ দ্বাৰা মানসিক শান্তি। সন্তানৰ শৰীৰ স্বাস্থ্যৰ প্রতি সচেতন হব।

বৃষ: কোনো আত্মীয় স্বজনৰ লগত মনোমালিন্য ঘটিব পাৰে। অদৰকাৰী কর্মত চেষ্টা পৰাক্রম প্রদর্শনৰ পৰা বিৰত থাকক। বিদ্যাৰ ক্ষেত্রত বাধাৰ সম্মুখীন হব পাৰে।

মিথুন: আর্থিক ক্ষেত্রত সপ্তাহটো শুভ। মানসিক অস্থিৰতা থাকিব। ভ্রমণৰ পৰা ব্যয় বৃদ্ধিৰ সম্ভাৱনা আছে।

কর্কট: ব্যয় বৃদ্ধিৰ সম্ভাৱনা আছে। শাৰিৰীক ক্ষেত্রত সপ্তাহটো শুভ। কঠোৰ বাক্য বানৰ পৰা বিৰত থাকক।

সিংহ: ব্যয় বৃদ্ধিৰ সম্ভাৱনা আছে। আধ্যাত্মিক ক্ষেত্রত মনোনিবশ থাকিব। মানসিক অস্থিৰতা বৃদ্ধি।

কন্যা : কর্মক্ষেত্রত অস্থিৰতা বৃদ্ধি। দৰকাৰী সিদ্ধান্ত গ্রহণৰ ক্ষেত্রত সাৱধানতা অৱলম্বন কৰিব। আধ্যাত্মিক ক্ষেত্রত মনোনিবশ থাকিব।

তুলা: কর্মব্যস্ততা বৃদ্ধিৰ সম্ভাৱনা আছে। সামাজিক কর্ম্মৰ ক্ষেত্রত সতর্কতা অৱলম্বন কৰিব। ধর্মীয় ক্ষেত্রত মনোনিবশ থাকিব।

বৃশ্চিক: মানসিক অস্থিৰতা বৃদ্ধি। আর্থিক ক্ষেত্রত সপ্তাহটো শুভ। কর্মক্ষেত্রত সতর্কতা অৱলম্বন কৰিব।

ধনু : পাতি পত্নীৰ মাজত মনোমালিন্য ঘটিব পাৰে। আধ্যাত্মিক কর্ম্মৰ লগত জৰিত কর্ম্মৰ পৰা লাভ। পিতৃৰ শৰীৰ স্বাস্থ্যৰ প্রতি সচেতন হব।

মকৰ: কর্মব্যস্ততা বৃদ্ধি। দৈনন্দিন বার্তা বিনিময়ৰ ক্ষেত্রত সাৱধানতা অৱলম্বন কৰিব। কোনো কথাই মানসিক অস্থিৰতা বৃদ্ধি কৰিব পাৰে।

কুম্ভ : মানসিক অস্থিৰতা বৃদ্ধি। কর্ম দক্ষতাৰ সুনাম অর্জন। বার্তা বিনিময়ৰ ক্ষেত্রত সাৱধান হব।

মীন: মানসিক অস্থিৰতা বৃদ্ধি। আর্থিক ক্ষেত্রত সপ্তাহটো শুভ। অদৰকাৰি কর্ম ব্যস্ততা বৃদ্ধি হব পাৰে।

- হিতেন শর্মা শাস্ত্রী
অধ্যাপক, বিশ্ব জ্যোতিষ বিদ্যাপীঠ, অসম শাখা
যোগাযোগ : ৯৮৫৪০২৬৭৭৯

হোটেল বিলাস ইনত পাঁচজনক গুলীয়াই হত্যা

জন জন বিচাৰ
...✍ গুৱাহাটী

তদন্তৰ বাবে ছয়জনীয়া বিশেষ দল গঠন

গুৱাহাটীৰ লাচিত নগৰস্থিত হোটেল বিলাস ইনত সংঘটিত পাঁচজন লোকৰ নৃশংস হত্যাকাণ্ডৰ তদন্তৰ বাবে গুৱাহাটী আৰক্ষীয়ে ছয়জনীয়া বিশেষ তদন্তকাৰী দল (এছআইটি) গঠন কৰিছে। হোটেলখনৰ ভাৰা আৰু পৰিচালনাক লৈ সৃষ্টি হোৱা বিবাদৰ পৰিণতিত ২৬ অক্টোবৰৰ নিশা এই গুলীচালনাৰ ঘটনা সংঘটিত হোৱা বুলি আৰক্ষীয়ে জানিবলৈ দিছে।

আৰক্ষীৰ প্ৰাৰম্ভিক তদন্ত অনুসৰি, হোটেলখনৰ পৰিচালনা আৰু সা-সুবিধাক লৈ হোৱা মতানৈক্য নিষ্পত্তিৰ উদ্দেশ্যে এখন বৈঠকৰ আয়োজন কৰা হৈছিল। কিন্তু বৈঠক আৰম্ভ হোৱাৰ পূৰ্বেই বাক-বিতণ্ডাই মাৰপিটৰ ৰূপ লয় আৰু অভিযুক্ত ঘনকান্ত গগৈয়ে ছয়জন লোকৰ ওপৰত গুলীচালনা কৰাৰ অভিযোগ উঠিছে। এই ঘটনাত পাঁচজনৰ মৃত্যু হয়। আনহাতে, গুলীবিদ্ধ সত্যেন্দ্ৰ পাঠক (৪৩) গুৱাহাটী চিকিৎসা মহাবিদ্যালয় হাস্পতালত চিকিৎসাধীন হৈ আছে।

নিহতসকল হৈছে ৰবপেটাৰ ভুদেৱ ভৰালী (৬৫) আৰু নাৰায়ণ দাস (৪৮), লগতে গুৱাহাটীৰ নবীন নগৰৰ হেলেনা ভৰালী (৫৮), দেৱৰ্ষি কাশ্যপ (৩৯) আৰু ৰিনিকা কাশ্যপ (৩০)।

ভাৰা চুক্তিৰ পৰা সংঘাত

আৰক্ষীৰ তথ্য অনুসৰি, ২০২৫ চনৰ ১০ ছেপ্টেম্বৰত হোটেলখনৰ মালিক পক্ষই ঘনকান্ত গগৈৰ সৈতে পাঁচ বছৰৰ বাবে ভাৰা চুক্তি কৰিছিল। মাহিলি প্ৰায় ১.৮ লাখ টকা ভাৰা নিৰ্ধাৰণ কৰা হৈছিল। হোটেলখনৰ সংস্কাৰ আৰু পৰৱৰ্তী সময়ত ইয়াৰ ব্যৱহাৰ তথা বিভিন্ন সা-সুবিধাক লৈ দুয়োপক্ষৰ মাজত মতানৈক্যৰ সৃষ্টি হয় বুলি প্ৰাৰম্ভিক তদন্তত প্ৰকাশ পাইছে।

২৬ অক্টোবৰত এই বিবাদ মীমাংসাৰ বাবে বৈঠক অনুষ্ঠিত হোৱাৰ কথা আছিল। কিন্তু পৰিস্থিতি হঠাতে উত্তপ্ত হৈ পৰে আৰু গুলীচালনাৰ ঘটনা সংঘটিত হয়।

ঘটনাৰ খবৰ লাভ কৰি পল্টন বজাৰ আৰক্ষী থানাৰ দল নিশা প্ৰায় ৯ বজাত হোটেলখনত উপস্থিত হয়। আৰক্ষীৰ মতে, হোটেলৰ অভ্যৰ্থনা কক্ষত চাৰিজনৰ মৃতদেহ উদ্ধাৰ কৰা হয় আৰু আন দুজনক আঘাতপ্ৰাপ্ত অৱস্থাত পোৱা যায়। ইয়াৰে এজনৰ পিছত চিকিৎসালয়ত মৃত্যু হয়।

ছয়জনীয়া বিশেষ তদন্তকাৰী দল

ঘটনাৰ গুৰুত্ব বিবেচনা কৰি গুৱাহাটী আৰক্ষী আয়ুক্তালয়ে গঠন কৰা বিশেষ তদন্তকাৰী দলটোৰ নেতৃত্বত থাকিব যুটীয়া আৰক্ষী আয়ুক্ত অংকুৰ জৈন। দলটোত কেন্দ্ৰীয় আৰক্ষী জিলাৰ উপ-আৰক্ষী আয়ুক্ত শম্ভৰী মিশ্ৰ, অপৰাধ শাখাৰ উপ-আৰক্ষী আয়ুক্ত দেৱজিৎ নাথ, অতিৰিক্ত উপ-আৰক্ষী আয়ুক্ত ভিকু আচুমি, পল্টন বজাৰ থানাৰ ভাৰপ্ৰাপ্ত বিষয়া কুলেশজ্যোতি ভূঞা আৰু উপ-পৰিদৰ্শক অবিনাশ দাসক অন্তৰ্ভুক্ত কৰা হৈছে।

আৰক্ষীয়ে অভিযুক্তৰ পৰা গুলীচালনাত ব্যৱহাৰ কৰা বুলি সন্দেহ কৰা পিষ্টলটো জব্দ কৰিছে। অপৰাধ অনুসন্ধান বিভাগ আৰু ফৰেনছিক বিজ্ঞানাগাৰৰ বিশেষজ্ঞসকলে ঘটনাস্থলীৰ পৰা প্ৰমাণ সংগ্ৰহ কৰিছে। ঘটনাস্থলীৰ পৰা ৩২ কেলিবাৰৰ কেইবাটাও খালী কাৰ্টিজৰ খোলা আৰু সজীৱ কাৰ্টিজো উদ্ধাৰ কৰা হৈছে।

বিশেষ তদন্তকাৰী দলে ঘটনাৰ সম্পূৰ্ণ ক্ৰম, সাক্ষীৰ ভাষ্য, ফৰেনছিক প্ৰমাণ আৰু হত্যাকাণ্ডৰ আঁৰৰ পৰিস্থিতি পৰীক্ষা কৰিব। আৰক্ষীয়ে ঘটনাটোৰ সকলো দিশ সামৰি তদন্ত অব্যাহত ৰাখিছে।

পাঁচজন লোকৰ প্ৰাণ কাঢ়ি নিয়া এই ঘটনাই গুৱাহাটীৰ নিৰাপত্তা ব্যৱস্থা আৰু ব্যৱসায়িক বিবাদৰ ভয়ংকৰ পৰিণতিক লৈ নতুনকৈ প্ৰশ্নৰ সৃষ্টি কৰিছে। অৱশ্যে, হত্যাকাণ্ডৰ আঁৰৰ সম্পূৰ্ণ কাৰণ আৰু দায় নিৰ্ধাৰণ তদন্তৰ ফলাফলৰ ওপৰতহে নিৰ্ভৰ কৰিব।

"নগালেণ্ড চৰকাৰে কেনেকৈ দিলে ঘনকান্ত গগৈক বন্দুকৰ অনুজ্ঞাপত্ৰ"

গুৱাহাটী। গুৱাহাটীৰ উলুবাৰীস্থিত বিলাস ইন হোটেলত গুলীচালনা কৰি পাঁচজন লোকক হত্যা কৰাৰ অভিযোগত গ্ৰেপ্তাৰ হোৱা ঘনকান্ত গগৈৰ বন্দুকৰ অনুজ্ঞাপত্ৰক লৈ নতুন প্ৰশ্নৰ উত্থাপন হৈছে। অভিযুক্তজনৰ হাতত থকা বন্দুকৰ অনুজ্ঞাপত্ৰ অসম চৰকাৰে নহয়, নগালেণ্ড চৰকাৰে প্ৰদান কৰিছিল বুলি প্ৰকাশ কৰিছে অসমৰ মুখ্যমন্ত্ৰী হিমন্ত বিশ্ব শৰ্মাই। অনুজ্ঞাপত্ৰখন কেনে পৰিস্থিতিত প্ৰদান কৰা হৈছিল, সেই বিষয়ে জানিব লাগিব বুলিও তেওঁ মন্তব্য কৰে। মুখ্যমন্ত্ৰী শৰ্মাই কয়, "অনুজ্ঞাপত্ৰখন প্ৰদান কৰাৰ সময়ত কি পৰিস্থিতি আছিল, সেই বিষয়ে আমি বুজি পোৱা প্ৰয়োজন। এই অনুজ্ঞাপত্ৰ অসম চৰকাৰে প্ৰদান কৰা নাছিল।" ঘটনাটোক ব্যক্তিগত বিবাদৰ পৰিণতি বুলি উল্লেখ কৰি মুখ্যমন্ত্ৰীগৰাকীয়ে কয় যে আৰক্ষীয়ে ইতিমধ্যে অভিযুক্তক গ্ৰেপ্তাৰ কৰিছে আৰু আইন অনুসৰি পৰৱৰ্তী ব্যৱস্থা গ্ৰহণ কৰা হ'ব। অৱশ্যে বন্দুকৰ অনুজ্ঞাপত্ৰ প্ৰদানৰ আঁৰৰ পৰিস্থিতি আৰু ইয়াৰ বৈধতা সম্পৰ্কীয় প্ৰশ্নসমূহ এতিয়াও স্পষ্ট হোৱা নাই।

ছিয়াং বান্ধবিৰোধী আন্দোলনৰ হিংসা: অধিবক্তা-সাংবাদিকসহ চাৰিজনৰ ঘৰত তালাচীৰ অনুমতি বিচাৰিলে আৰক্ষীয়ে

জন জন বিচাৰ
...✍ ইটানগৰ



অৰুণাচল প্ৰদেশৰ প্ৰস্তাৱিত ১১,২০০ মেগাৱাট শক্তিসম্পন্ন ছিয়াং উচ্চ বহুমুখী প্ৰকল্পৰ (SUMP) বিৰুদ্ধে প্ৰতিবাদক কেন্দ্ৰ কৰি সংঘটিত হিংসাত্মক ঘটনাৰ তদন্ত অধিক তীব্ৰ কৰি তুলিছে ৰাজ্যৰ আৰক্ষীয়ে। যোৱা ২৩ অক্টোবৰৰ পাছিঘাটৰ সংঘৰ্ষৰ সৈতে সম্পৰ্ক থকাৰ সন্দেহত এগৰাকী অধিবক্তা, এগৰাকী সাংবাদিকসহ চাৰিজন লোকৰ বাসগৃহত তালাচী চলোৱাৰ অনুমতি বিচাৰি পূব ছিয়াং জিলাৰ মুখ্য ন্যায়িক দণ্ডাধীশৰ আদালতত আবেদন দাখিল কৰিছে আৰক্ষীয়ে।

২৭ অক্টোবৰত তদন্তকাৰী বিষয়া উপ-পৰিদৰ্শক কডাক ডাগিয়ামে দাখিল কৰা আবেদনখনত কৰ্মী অটুল জেৰাং (৩০), টাজং টালোম (৩০), অধিবক্তা ছানী টায়েং আৰু সাংবাদিক টংগাম ৰিনাৰ বাসগৃহত তালাচীৰ অনুমতি বিচৰা হৈছে।

আৰক্ষীয়ে তালাচীৰ সময়ত ২৩ অক্টোবৰৰ হিংসাত্মক ঘটনাৰ সময়ত পৰিধান কৰা বুলি সন্দেহ কৰা কাপোৰ, ম'বাইল ফোন, আলোকচিত্ৰ আৰু দৃশ্যগ্ৰহণৰ তথ্য থকা বৈদ্যুতিন সঁজুলি তথা তদন্তৰ বাবে প্ৰাসংগিক অন্যান্য সামগ্ৰী জব্দ কৰিব বিচাৰিছে। তদন্তকাৰী বিষয়াৰ মতে, এই সামগ্ৰীসমূহে ঘটনাৰ ক্ৰম পুনৰ নিৰ্মাণ, অভিযুক্তসকলৰ ভূমিকা নিৰ্ধাৰণ আৰু সাক্ষীৰ বক্তব্যৰ সত্যতা পৰীক্ষাত সহায় কৰিব পাৰে।

ভাৰতীয় নাগৰিক সুৰক্ষা সংহিতা, ২০২৩ৰ ৯৬ নং ধাৰা অথবা প্ৰযোজ্য আন আইনী বিধানৰ অধীনত তালাচীৰ পৰোৱানা বিচৰা হৈছে। অৱশ্যে, আদালতে আবেদনখনৰ সন্দৰ্ভত কি সিদ্ধান্ত গ্ৰহণ কৰিছে, সেয়া এতিয়ালৈকে জানিব পৰা হোৱা নাই।

উল্লেখ্য যে, প্ৰস্তাৱিত বৃহৎ জলবিদ্যুৎ প্ৰকল্পটোৰ বিৰুদ্ধে প্ৰতিবাদে ২৩ আৰু ২৪ অক্টোবৰত পাছিঘাটত হিংসাত্মক ৰূপ ধাৰণ কৰিছিল। আৰক্ষীৰ অভিযোগ অনুসৰি, প্ৰতিবাদকাৰীয়ে নিৰাপত্তাৰক্ষীৰ ওপৰত আক্ৰমণ চলোৱাৰ লগতে আৰক্ষীৰ বাহন ক্ষতিগ্ৰস্ত কৰে। এখন আৰক্ষী থানা আৰু ৰাষ্ট্ৰীয় জলবিদ্যুৎ নিগমৰ কাৰ্যালয়তো অগ্নিসংযোগ আৰু লণ্ডভণ্ডৰ ঘটনা সংঘটিত হয়।

ইয়াৰ উপৰি ৰাজ্যিক বিজেপিৰ সভাপতি তথা প্ৰাক্তন বিধায়ক কলিং ময়ঙৰ বাসগৃহ, পাছিঘাট পশ্চিম সমষ্টিৰ বিধায়ক নিনং এৰিঙৰ বাসগৃহ আৰু আদি বানে কেবাঙৰ কেন্দ্ৰীয় কাৰ্যালয়ত আক্ৰমণ চলোৱাৰ অভিযোগ উত্থাপিত হৈছে।

আৰক্ষীয়ে এই ঘটনাৰ সৈতে জড়িত মুঠ আঠটা গোচৰ ৰুজু কৰাৰ লগতে পাঁচগৰাকী কিশোৰসহ ২৬জন লোকক গ্ৰেপ্তাৰ কৰিছে। আন ছজনক সোধা-পোছাৰ বাবে আটক কৰা হৈছে বুলি আৰক্ষীৰ বিবৃতিত প্ৰকাশ।

আনহাতে, ১১,২০০ মেগাৱাটৰ প্ৰস্তাৱিত ছিয়াং উচ্চ বহুমুখী প্ৰকল্পক লৈ স্থানীয় জনজাতীয় সংগঠন আৰু বাইজৰ মাজত তীব্ৰ আপত্তি অব্যাহত আছে। প্ৰকল্পটোৱে পূৰ্বপুৰুষৰ ভূমি, জীৱিকা আৰু প্ৰাকৃতিক পৰিবেশৰ ওপৰত বিৰূপ প্ৰভাৱ পেলাব পাৰে বুলি আশংকা প্ৰকাশ কৰিছে প্ৰতিবাদকাৰীসকলে। প্ৰাথমিক জৰীপ বন্ধ কৰা, আটকাধীন কৰ্মীসকলক মুকলি কৰি দিয়া আৰু প্ৰভাৱিত অঞ্চলৰ পৰা নিৰাপত্তাৰক্ষী প্ৰত্যাহাৰৰ দাবীও উত্থাপন হৈছে।

ইফালে, ৰাজ্য চৰকাৰে জল সুৰক্ষা, বান নিয়ন্ত্ৰণ আৰু বিদ্যুৎ উৎপাদনৰ সম্ভাব্য সুবিধাৰ কথা উল্লেখ কৰি সকলো পক্ষকে আলোচনাৰ মাধ্যমেৰে মতানৈক্য দূৰ কৰিবলৈ আহ্বান জনাইছে।

প্ৰকল্পটোক লৈ জনজাতীয় সমাজৰ উদ্বেগ, প্ৰতিবাদ আৰু আৰক্ষীৰ তদন্ত-এই তিনিওটা দিশে অৰুণাচলৰ ছিয়াং উপত্যকাৰ পৰিস্থিতিক অধিক সংবেদনশীল কৰি তুলিছে। চাৰিটা বাসগৃহত তালাচীৰ অনুমতি বিচাৰি আৰক্ষীয়ে আদালতৰ দ্বাৰস্থ হোৱা ঘটনাই এতিয়া এই বিবাদক নতুন মাত্ৰা প্ৰদান কৰিছে।

সম্পাদকীয়

ব্রহ্মপুত্রৰ সুৰক্ষা বনাম আদি জনগোষ্ঠীৰ আশংকা

অৰুণাচল প্রদেশৰ প্রস্তাৱিত ১১,২০০ মেগাৱাটৰ ছিয়াং উচ্চ বহুমুখী প্রকল্পক লৈ এতিয়া সিদ্ধান্তহীনতাৰ সময় নহয়, ৰাষ্ট্রীয় স্বাৰ্থ আৰু জনজাতীয় অধিকাৰৰ মাজত বিশ্বাসৰ সেতু গঢ়াৰ সময়। তিব্বতত ব্রহ্মপুত্রৰ উজনিৰ য়াৰলুং ছাংপো নদীৰ ওপৰত চীনে ৬০,০০০ মেগাৱাটৰ বৃহৎ জলবিদ্যুৎ প্রকল্প নির্মাণৰ পদক্ষেপ লৈছে। এনে পৰিস্থিতিত ভাৰত চৰকাৰে হাত সাৱটি বহি থাকিব নোৱাৰে। উজনিৰ পানীৰ প্রবাহ নিয়ন্ত্রণৰ সম্ভাৱনা কেৱল বিদ্যুতৰ প্রশ্ন নহয়; ই উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলৰ জল-নিৰাপত্তা আৰু কৌশলগত স্বাৰ্থৰ সৈতেও জড়িত।

কিন্তু প্রশ্ন হ'ল-চীনৰ প্রত্যাহ্বানৰ উত্তৰ দিবলৈ ওলাই নিজৰ মানুহৰ আস্থাই যদি হেৰুৱাবলগীয়া হয়, তেন্তে সেই কৌশল কিমান দূৰ সফল হ'ব? আদি জনগোষ্ঠীৰ গাঁও, কৃষিভূমি, পূৰ্বপুৰুষৰ স্মৃতি আৰু সাংস্কৃতিক পৰিচয়ৰ ওপৰত প্রকল্পটোৱে পেলাব পৰা প্রভাৱক কেৱল উন্নয়নৰ মূল্য বুলি উলাই কৰিব নোৱাৰি। ২৩ অক্টোবৰত পাছিঘাটত প্রতিবাদে হিংসাত্মক ৰূপ লোৱাটো নিন্দনীয়, কিন্তু প্রতিবাদক কেৱল আইন-শৃংখলাৰ সমস্যা বুলি দেখুওৱাটোও চৰকাৰৰ ডাঙৰ ভুল হ'ব।

ৰাষ্ট্রীয় নিৰাপত্তাৰ নামত জনসাধাৰণৰ আস্থা বলি দিব নোৱাৰি; আকৌ স্থানীয় আশংকাৰ অজুহাতত ৰাষ্ট্রীয় প্রত্যাহ্বানকো উপেক্ষা কৰিব নোৱাৰি। চৰকাৰে প্রথমে স্পষ্টকৈ জনাব লাগিব- প্রকল্পটোৱে বানৰ বিপদ কিমান হ্রাস কৰিব পাৰিব, ভূমিকম্পপ্রৱণ অঞ্চলত ইয়াৰ সুৰক্ষা কিমান নিশ্চিত আৰু ক্ষতিগ্রস্ত পৰিয়ালৰ ভৱিষ্যৎ কেনেকৈ সুৰক্ষিত হ'ব।

কেৱল আশ্বাস, প্রচাৰ আৰু কঠোৰ স্থিতিৰে এই সংকট সমাধান নহয়। প্রয়োজন স্বচ্ছ তথ্য, স্বাধীন পৰিৱেশগত আৰু ভূতাত্ত্বিক মূল্যায়ন, প্রভাৱিত জনগোষ্ঠীৰ সৈতে অর্থপূর্ণ আলোচনা আৰু ন্যায্য পুনর্বাসন।

চীনৰ প্রত্যাহ্বানৰ সম্মুখত ভাৰতক শক্তিশালী হ'বই লাগিব। কিন্তু সেই শক্তি কেৱল বৃহৎ বান্ধেৰে নহয়, নিজৰ নাগৰিকৰ বিশ্বাসেৰেহে গঢ়ি উঠিব। ব্রহ্মপুত্রৰ সুৰক্ষা নিশ্চিত কৰাৰ যুঁজত আদি জনগোষ্ঠীক প্রতিপক্ষ নহয়, অংশীদাৰ হিচাপে ল'ব পাৰিলেহে চৰকাৰৰ প্রকৃত অগ্নিপৰীক্ষাত উত্তীর্ণ হ'ব।

ভোটাৰ তালিকা শুদ্ধিকৰণত আপত্তি কিয়?

জন জন বিচাৰ
...✍ অজয় শৰ্মা

ভাৰতীয় গণতন্ত্রৰ শক্তি কেৱল নির্বাচন অনুষ্ঠিত কৰাত নাই, ৰবং প্রতিজন যোগ্য নাগৰিকে যাতে নির্ভয়ে নিজৰ ভোটাধিকাৰ সাব্যস্ত কৰিব পাৰে, সেয়া নিশ্চিত কৰাতহে আছে। কিন্তু এই ব্যৱস্থাৰ ভেটি হিচাপে থকা ভোটাৰ তালিকাখনেই যদি মৃত ব্যক্তি, দ্বৈত নাম, ভুৱা পৰিচয় আৰু স্থানান্তৰিত ভোটাৰৰ নামৰে ভৰি থাকে, তেন্তে নির্বাচনৰ স্বচ্ছতা আৰু বিশ্বাসযোগ্যতা সম্পর্কে প্রশ্ন উত্থাপন হোৱাটো স্বাভাৱিক। এই প্রেক্ষাপটতে নির্বাচন আয়োগৰ বিশেষ নিবিড় পুনৰীক্ষণ (SIR)ক লৈ দেশজুৰি সৃষ্টি হোৱা বিতর্কই এক গুৰুত্বপূর্ণ সাংবিধানিক প্রশ্ন উত্থাপন কৰিছে- ভোটাৰ তালিকা শুদ্ধ কৰাৰ প্রচেষ্টাক লৈ আপত্তি কিয়?

ভাৰতৰ দৰে বৃহৎ গণতন্ত্রত ভোটাৰ তালিকা এখন স্থিৰ নথি নহয়। প্রতি বছৰে লাখ লাখ লোকৰ মৃত্যু হয়, নতুন প্রজন্মই ভোটদানৰ যোগ্যতা অর্জন কৰে আৰু বহু লোকে কর্মসংস্থান অথবা অন্যান্য কাৰণত বাসস্থান সলনি কৰে। একে ব্যক্তিৰ নাম একাধিক সমষ্টিত থাকিব পাৰে। এনে পৰিস্থিতিত সময়ে সময়ে ভোটাৰ তালিকা পৰীক্ষা আৰু সংশোধন কৰাটো নির্বাচনী ব্যৱস্থাৰ স্বাভাৱিক প্রয়োজন। মৃত ব্যক্তিৰ নাম আঁতৰোৱা, স্থানান্তৰিত ভোটাৰৰ তথ্য সংশোধন কৰা আৰু একেজন ব্যক্তিৰ একাধিক নামৰ অস্তিত্ব ৰোধ কৰাটো কোনো ৰাজনৈতিক অনুগ্রহ নহয়, ৰবং নির্বাচনী ব্যৱস্থাৰ মৌলিক দায়িত্ব।

কিন্তু ইয়াত এটা গুৰুত্বপূর্ণ পার্থক্য আছে। ভোটাৰ তালিকা শুদ্ধ কৰা আৰু প্রকৃত ভোটাৰক ভোটাধিকাৰৰ পৰা বঞ্চিত কৰা একে কথা নহয়। নির্বাচনী স্বচ্ছতাৰ নামত কোনো যোগ্য নাগৰিকৰ নাম যাতে ভুলবশতঃ বাদ নপৰে, সেয়াও সমানেই গুৰুত্বপূর্ণ। সেয়েহে এছআইআৰৰ প্রয়োজনীয়তাৰ লগতে ইয়াৰ কার্যকৰী পদ্ধতি, স্বচ্ছতা আৰু নাগৰিকৰ আপত্তি দাখিলৰ অধিকাৰো সমান গুৰুত্ব পাব লাগিব।

অসমৰ ক্ষেত্রত এই বিষয়টোৰ তাৎপর্য আৰু গভীৰ। বিদেশী নাগৰিকৰ অনুপ্রবেশ আৰু ভোটাৰ তালিকাত সন্দেহজনক নাম অন্তর্ভুক্তিৰ অভিযোগ অসমৰ ৰাজনৈতিক ইতিহাসৰ সৈতে ওতপ্রোতভাৱে জড়িত। ১৯৭৯ চনত আৰম্ভ হোৱা অসম আন্দোলনৰ অন্যতম মূল দাবী আছিল ভোটাৰ তালিকাৰ পৰা বিদেশীৰ নাম চিনাক্ত কৰি কর্তন কৰা। ১৯৮৫ চনৰ অসম চুক্তিয়েও ১৯৭১ চনৰ ২৪ মার্চৰ মাজনিশাক নাগৰিকত্ব নির্ধাৰণৰ ভিত্তি হিচাপে গ্রহণ কৰিছিল।

সেই সময়ৰ অসমৰ পৰিস্থিতি কেৱল ৰাজনৈতিক আন্দোলনৰ বিষয় নাছিল। ই আছিল ভূমি, ভাষা, সংস্কৃতি, পৰিচয় আৰু ৰাজনৈতিক অধিকাৰ ৰক্ষাৰ এক গভীৰ সামাজিক উদ্বেগ। ভোটাৰ তালিকাত বিদেশীৰ নাম অন্তর্ভুক্ত হোৱাৰ অভিযোগে এই উদ্বেগক অধিক তীব্র কৰি তুলিছিল। ১৯৮০ আৰু ১৯৮৩ চনৰ নির্বাচনক কেন্দ্র কৰিও ৰাজ্যত ব্যাপক ৰাজনৈতিক আৰু সামাজিক অস্থিৰতা সৃষ্টি হৈছিল। সেই ইতিহাসে এটা কথা স্পষ্ট কৰে-অসমত ভোটাৰ তালিকাৰ শুদ্ধতাৰ প্রশ্নক সাধাৰণ প্রশাসনিক কাম বুলি উপেক্ষা কৰিব নোৱাৰি।

ৰাষ্ট্রীয় পর্যায়তো এই বিষয়টো নতুন নহয়। ১৯৯৭ চনত তদানীন্তন কেন্দ্রীয় গৃহমন্ত্রী ইন্দ্রজিৎ গুপ্তই সংসদত দেশত প্রায় এক কোটি বাংলাদেশী অনুপ্রবেশকাৰী থকাৰ অনুমান প্রকাশ কৰিছিল। অৱশ্যে এই সংখ্যা কোনো সর্বশেষ বা প্রমাণিত গণনা নাছিল। ইয়াৰ পৰাই বুজিব পাৰি যে অবৈধ অনুপ্রবেশৰ প্রশ্ন বহু দশক ধৰি ৰাষ্ট্রীয় নিৰাপত্তা আৰু ৰাজনৈতিক আলোচনাৰ অংশ হৈ আহিছে।

কিন্তু এটা কথা মনত ৰখা প্রয়োজন- ভোটাৰ তালিকাত নাম থকাটোৱেই নাগৰিকত্বৰ চূড়ান্ত প্রমাণ নহয়, আৰু নামৰ ওপৰত সন্দেহ প্রকাশ কৰিলেই কোনো ব্যক্তি বিদেশী হৈ নাযায়। নাগৰিকত্ব নির্ধাৰণৰ বাবে আইন আৰু নির্ধাৰিত ন্যায়িক তথা প্রশাসনিক প্রক্রিয়া আছে। ধর্ম, ভাষা, জাতিগত পৰিচয় অথবা বাসস্থানৰ ভিত্তিত কোনো লোকক বিদেশী বুলি চিহ্নিত কৰাটো গণতান্ত্রিক নীতিৰ পৰিপন্থী।

ইয়াতেই নির্বাচন আয়োগৰ দায়িত্ব অধিক গুৰুত্বপূর্ণ হৈ পৰে। সংবিধানৰ ৩২৪ নং অনুচ্ছেদে নির্বাচন আয়োগক নির্বাচনী ব্যৱস্থাৰ তদাৰক, নির্দেশনা আৰু নিয়ন্ত্রণৰ ক্ষমতা প্রদান কৰিছে। আনহাতে, ৩২৬ নং অনুচ্ছেদে প্রাপ্তবয়স্ক নাগৰিকৰ ভোটাধিকাৰৰ সাংবিধানিক ভিত্তি নির্ধাৰণ কৰিছে। অর্থাৎ আয়োগৰ দায়িত্ব হৈছে ভোটাৰ তালিকা নির্ভুল কৰা, কিন্তু একে সময়তে কোনো যোগ্য নাগৰিকৰ ভোটাধিকাৰ যাতে খর্ব নহয়, সেয়াও নিশ্চিত কৰা।

এছআইআৰক লৈ বিৰোধী দলসমূহে উত্থাপন কৰা আপত্তিৰ ভিতৰত আছে-প্রক্রিয়াৰ স্বচ্ছতা, নথি-পত্রৰ জটিলতা, দৰিদ্র আৰু প্রান্তীয় লোকৰ অসুবিধা, লগতে বৈধ ভোটাৰৰ নাম বাদ পৰাৰ আশংকা। এই আপত্তিসমূহক ৰাজনৈতিক বুলি উলাই দিয়াৰ পৰিৱর্তে নির্বাচন আয়োগে তথ্য আৰু যুক্তিৰে উত্তৰ দিয়া উচিত। বুথ পর্যায়ৰ বিষয়াসকলৰ ওপৰত অতিৰিক্ত কামৰ বোজা নিদিয়াকৈ, ঘৰে ঘৰে পৰীক্ষা, তথ্যৰ সঠিক সংৰক্ষণ আৰু আপত্তি নিষ্পত্তিৰ ব্যৱস্থা শক্তিশালী কৰিব লাগিব।

একেদৰে ৰাজনৈতিক দলসমূহেও ভোটাৰ তালিকা শুদ্ধিকৰণৰ প্রক্রিয়াক দলীয় লাভালাভৰ দৃষ্টিৰে বিচাৰ কৰা উচিত নহয়।

এছআইআৰক লৈ বিৰোধী দলসমূহে উত্থাপন কৰা আপত্তিৰ ভিতৰত আছে-প্রক্রিয়াৰ স্বচ্ছতা, নথি-পত্রৰ জটিলতা, দৰিদ্র আৰু প্রান্তীয় লোকৰ অসুবিধা, লগতে বৈধ ভোটাৰৰ নাম বাদ পৰাৰ আশংকা। এই আপত্তিসমূহক ৰাজনৈতিক বুলি উলাই দিয়াৰ পৰিৱর্তে নির্বাচন আয়োগে তথ্য আৰু যুক্তিৰে উত্তৰ দিয়া উচিত। বুথ পর্যায়ৰ বিষয়াসকলৰ ওপৰত অতিৰিক্ত কামৰ বোজা নিদিয়াকৈ, ঘৰে ঘৰে পৰীক্ষা, তথ্যৰ সঠিক সংৰক্ষণ আৰু আপত্তি নিষ্পত্তিৰ ব্যৱস্থা শক্তিশালী কৰিব লাগিব।

একেদৰে ৰাজনৈতিক দলসমূহেও ভোটাৰ তালিকা শুদ্ধিকৰণৰ প্রক্রিয়াক দলীয় লাভালাভৰ দৃষ্টিৰে বিচাৰ কৰা উচিত নহয়।

এছআইআৰক লৈ বিৰোধী দলসমূহে উত্থাপন কৰা আপত্তিৰ ভিতৰত আছে-প্রক্রিয়াৰ স্বচ্ছতা, নথি-পত্রৰ জটিলতা, দৰিদ্র আৰু প্রান্তীয় লোকৰ অসুবিধা, লগতে বৈধ ভোটাৰৰ নাম বাদ পৰাৰ আশংকা। এই আপত্তিসমূহক ৰাজনৈতিক বুলি উলাই দিয়াৰ পৰিৱর্তে নির্বাচন আয়োগে তথ্য আৰু যুক্তিৰে উত্তৰ দিয়া উচিত। বুথ পর্যায়ৰ বিষয়াসকলৰ ওপৰত অতিৰিক্ত কামৰ বোজা নিদিয়াকৈ, ঘৰে ঘৰে পৰীক্ষা, তথ্যৰ সঠিক সংৰক্ষণ আৰু আপত্তি নিষ্পত্তিৰ ব্যৱস্থা শক্তিশালী কৰিব লাগিব।

একেদৰে ৰাজনৈতিক দলসমূহেও ভোটাৰ তালিকা শুদ্ধিকৰণৰ প্রক্রিয়াক দলীয় লাভালাভৰ দৃষ্টিৰে বিচাৰ কৰা উচিত নহয়।

কিন্তু এটা কথা মনত ৰখা প্রয়োজন- ভোটাৰ তালিকাত নাম থকাটোৱেই নাগৰিকত্বৰ চূড়ান্ত প্রমাণ নহয়, আৰু নামৰ ওপৰত সন্দেহ প্রকাশ কৰিলেই কোনো ব্যক্তি বিদেশী হৈ নাযায়। নাগৰিকত্ব নির্ধাৰণৰ বাবে আইন আৰু নির্ধাৰিত ন্যায়িক তথা প্রশাসনিক প্রক্রিয়া আছে। ধর্ম, ভাষা, জাতিগত পৰিচয় অথবা বাসস্থানৰ ভিত্তিত কোনো লোকক বিদেশী বুলি চিহ্নিত কৰাটো গণতান্ত্রিক নীতিৰ পৰিপন্থী।

ইয়াতেই নির্বাচন আয়োগৰ দায়িত্ব অধিক গুৰুত্বপূর্ণ হৈ পৰে। সংবিধানৰ ৩২৪ নং অনুচ্ছেদে নির্বাচন আয়োগক নির্বাচনী ব্যৱস্থাৰ তদাৰক, নির্দেশনা আৰু নিয়ন্ত্রণৰ ক্ষমতা প্রদান কৰিছে। আনহাতে, ৩২৬ নং অনুচ্ছেদে প্রাপ্তবয়স্ক নাগৰিকৰ ভোটাধিকাৰৰ সাংবিধানিক ভিত্তি নির্ধাৰণ কৰিছে। অর্থাৎ আয়োগৰ দায়িত্ব হৈছে ভোটাৰ তালিকা নির্ভুল কৰা, কিন্তু একে সময়তে কোনো যোগ্য নাগৰিকৰ ভোটাধিকাৰ যাতে খর্ব নহয়, সেয়াও নিশ্চিত কৰা।

এছআইআৰক লৈ বিৰোধী দলসমূহে উত্থাপন কৰা আপত্তিৰ ভিতৰত আছে-প্রক্রিয়াৰ স্বচ্ছতা, নথি-পত্রৰ জটিলতা, দৰিদ্র আৰু প্রান্তীয় লোকৰ অসুবিধা, লগতে বৈধ ভোটাৰৰ নাম বাদ পৰাৰ আশংকা। এই আপত্তিসমূহক ৰাজনৈতিক বুলি উলাই দিয়াৰ পৰিৱর্তে নির্বাচন আয়োগে তথ্য আৰু যুক্তিৰে উত্তৰ দিয়া উচিত। বুথ পর্যায়ৰ বিষয়াসকলৰ ওপৰত অতিৰিক্ত কামৰ বোজা নিদিয়াকৈ, ঘৰে ঘৰে পৰীক্ষা, তথ্যৰ সঠিক সংৰক্ষণ আৰু আপত্তি নিষ্পত্তিৰ ব্যৱস্থা শক্তিশালী কৰিব লাগিব।

একেদৰে ৰাজনৈতিক দলসমূহেও ভোটাৰ তালিকা শুদ্ধিকৰণৰ প্রক্রিয়াক দলীয় লাভালাভৰ দৃষ্টিৰে বিচাৰ কৰা উচিত নহয়। মৃতকৰ নাম থাকিলে সেই নাম কর্তনৰ দাবী কৰা আৰু একেজন ব্যক্তিৰ দ্বৈত নামৰ বিৰোধিতা কৰাটো যেনেকৈ যুক্তিসংগত, তেনেকৈ কোনো বৈধ ভোটাৰৰ নাম বাদ পৰিলে তাৰ বিৰুদ্ধে মাত মতাটোও সমানেই প্রয়োজনীয়।

গণতন্ত্রত ভোট কেৱল এটা বুটাম টিপাৰ অধিকাৰ নহয়; ইনাগৰিকৰ ৰাজনৈতিক অস্তিত্ব আৰু ৰাষ্ট্রৰ সিদ্ধান্ত গ্রহণত অংশগ্রহণৰ অধিকাৰ। সেই অধিকাৰক ভুৱা পৰিচয়ৰ জৰিয়তে অপব্যৱহাৰ কৰিবলৈ দিয়াটো যেনেকৈ বিপজ্জনক, তেনেকৈ প্রকৃত নাগৰিকক প্রশাসনিক ভুলৰ বাবে ভোটাধিকাৰৰ পৰা বঞ্চিত কৰাটোও সমানেই অগ্রহণযোগ্য।

সেয়েহে এছআইআৰক লৈ বিতর্কৰ মূল প্রশ্নটো হোৱা উচিত নহয়-কোন ৰাজনৈতিক দলৰ লাভ বা লোকচান হব? প্রকৃত প্রশ্নটো হল-কেনেকৈ প্রতিজন যোগ্য নাগৰিকৰ নাম ভোটাৰ তালিকাত সুৰক্ষিত ৰাখি মৃত, দ্বৈত আৰু আইনগতভাৱে অযোগ্য ব্যক্তিৰ নাম আঁতৰোৱা সম্ভৱ?

ভোটাৰ তালিকা কাৰো ৰাজনৈতিক সম্পত্তি নহয়। ই গণতন্ত্রৰ বিশ্বাসযোগ্যতাৰ দলিল। এই দলিল নির্ভুল কৰাৰ দায়িত্ব নির্বাচন আয়োগৰ, আৰু ইয়াক নিৰপেক্ষ, স্বচ্ছ তথা ন্যায়সংগত কৰি ৰখাৰ দায়িত্ব সমগ্র ৰাজনৈতিক ব্যৱস্থাৰ। কাৰণ, ভুৱা ভোটাৰে গণতন্ত্রক দুর্বল কৰে, কিন্তু প্রকৃত ভোটাৰৰ ভোটাধিকাৰ হৰণ কৰিলেও গণতন্ত্র শক্তিশালী নহয়।

ইৰানৰ ভাবুকিক ঢাল কৰি ক্ষমতাত থাকিব বিচাৰিছে নেকি নেতানিয়াহুৱে?

জন জন বিচাৰ
...✍ তেল আভিভ

নিৰ্বাচনত জনতাৰ ৰায় নিজৰ পক্ষত নোযোৱাৰ পাছতো ক্ষমতা এৰিবলৈ সাজু নহয় নেকি ইজৰাইলৰ প্ৰধানমন্ত্ৰী বেঞ্জামিন নেতানিয়াহু? ইৰানৰ পৰা আহিব পৰা নিৰাপত্তাজনিত ভাবুকিক আগত ৰাখি তেওঁ ক্ষমতাত বৰ্তি থকাৰ ৰাজনৈতিক যুক্তি দাঙি ধৰিছে নেকি? ইজৰাইলৰ শেহতীয়া সংসদীয় নিৰ্বাচনৰ ফল ঘোষণাৰ পাছত এই প্ৰশ্নবোৰে দেশখনৰ ৰাজনীতিত নতুন বিতৰ্কৰ সৃষ্টি কৰিছে।

১২০খন আসনবিশিষ্ট ইজৰাইলৰ সংসদ নেছেট'ত চৰকাৰ গঠনৰ বাবে প্ৰয়োজন ৬১খন আসন। কিন্তু নিৰ্বাচনৰ সম্পূৰ্ণ ফলাফল অনুসৰি নেতানিয়াহুৰ লিকুড দলৰ নেতৃত্বাধীন মিত্ৰজোঁটে লাভ কৰিছে মাত্ৰ ৫৩খন আসন। আনহাতে, বিৰোধী নেতা গাদি আইজেনকটৰ শিবিৰে লাভ কৰিছে ৪৮খন আসন। আৰৱ দলসমূহে লাভ কৰা ১৯খন আসনো ৰাজনৈতিক সমীকৰণত গুৰুত্বপূৰ্ণ হৈ উঠিছে। অৰ্থাৎ কোনো এটা শিবিৰেই অকলে চৰকাৰ গঠনৰ বাবে প্ৰয়োজনীয় সংখ্যাগৰিষ্ঠতা লাভ কৰা নাই।

লিকুড দলে ২৭খন আসন লাভ কৰি একক বৃহত্তম দল হিচাপে আত্মপ্ৰকাশ কৰিলেও এই সফলতাই নেতানিয়াহুৰ চৰকাৰ গঠনৰ পথ মুকলি কৰা নাই। সংখ্যাৰ এইবাস্তৱতাৰ মাজতে তেওঁ সমৰ্থকসকলক উদ্দেশ্যি দিয়া ভাষণত ইৰানৰ প্ৰসংগ উত্থাপন কৰে।

নেতানিয়াহুৰ ভাষ্য অনুসৰি, ইৰানৰ শাসনব্যৱস্থাই ইজৰাইলৰ অস্তিত্বৰ প্ৰতি ভাবুকি কঢ়িয়াই আনিছে আৰু সেই ভাবুকি সম্পূৰ্ণৰূপে নিৰ্মূল নোহোৱালৈকে তেওঁৰ অভিযান শেষ হোৱা নাই। আমেৰিকাৰ ৰাষ্ট্ৰপতি ডনাল্ড ট্ৰাম্পৰ সহযোগত এই বিপদৰ মোকাবিলা



কৰিব পৰা যাব বুলিও তেওঁ মন্তব্য কৰে। একে সময়তে তেওঁ এখন শক্তিশালী ৰাষ্ট্ৰীয় আৰু দক্ষিণপন্থী চৰকাৰ গঠনৰ আহ্বান জনায়।

কিন্তু প্ৰশ্নটো হল-ৰাষ্ট্ৰীয় নিৰাপত্তাৰ প্ৰশ্ন উত্থাপন কৰিলেই নিৰ্বাচনৰ ফলাফলৰ ৰাজনৈতিক তাৎপৰ্য সলনি হৈ যাবনে? ইৰানৰ ভাবুকি বাস্তৱিক হলেও চৰকাৰ গঠনৰ ক্ষেত্ৰত সংসদীয় সংখ্যাগৰিষ্ঠতাৰ প্ৰয়োজনীয়তা নোহোৱা হৈ নাযায়। নিৰাপত্তাৰ যুক্তি আৰু ক্ষমতাত থকাৰ ৰাজনৈতিক প্ৰয়োজনীয়তা একে বিষয় নহয়।

চৰকাৰ গঠনৰ তিনিটা সম্ভাৱনা

বৰ্তমানৰ পৰিস্থিতিত ইজৰাইলৰ ৰাজনীতিৰ সম্মুখত কেইবাটাও পথ খোলা আছে।

প্ৰথমতে, আইজেনকটৰ নেতৃত্বাধীন বিৰোধী শিবিৰে আৰৱ দলসমূহৰ সমৰ্থন লাভ কৰি চৰকাৰ গঠনৰ চেষ্টা কৰিব পাৰে। দুয়োটা শিবিৰৰ আসন যোগ কৰিলে সংখ্যা ৬৭ হয়। অৱশ্যে আৰৱ দলসমূহৰ সমৰ্থন লৈ চৰকাৰ গঠনৰ ক্ষেত্ৰত বিৰোধী শিবিৰৰ ভিতৰতে আপত্তি আছে। সেয়েহে এই সম্ভাৱনা বাস্তৱায়িত হোৱাটো সহজ নহয়।

দ্বিতীয়তে, নেতানিয়াহু আৰু আইজেনকটৰ মাজত ৰাষ্ট্ৰীয় ঐক্য চৰকাৰ গঠনৰ বুজাবুজি হব পাৰে। এনে ব্যৱস্থাত পাল পাতি প্ৰধানমন্ত্ৰীৰ দায়িত্ব পালন কৰাৰ প্ৰস্তাৱো আলোচনালৈ আহিব পাৰে। কিন্তু দুয়ো পক্ষৰ ৰাজনৈতিক মতভেদ আৰু নেতৃত্বৰ প্ৰশ্নই এই পথত বাধাৰ সৃষ্টি কৰিব পাৰে।

তৃতীয়তে, কোনো পক্ষই সংখ্যাগৰিষ্ঠতা সংগ্ৰহ কৰাত ব্যৰ্থ হলে পুনৰ নিৰ্বাচনৰ পথ মুকলি হব। ইজৰাইলৰ ৰাজনীতিত চৰকাৰ গঠনৰ অচলাৱস্থা নতুন ঘটনা নহয়। ২০১৯ৰ পৰা ২০২২ চনৰ ভিতৰত দেশখনত বাৰে বাৰে নিৰ্বাচন অনুষ্ঠিত হৈছিল। গতিকে এইবাৰো ৰাজনৈতিক সমাধান নোলালে পুনৰ ভোটগ্ৰহণৰ সম্ভাৱনা নুই কৰিব নোৱাৰি।

ক্ষমতা এৰিবলৈ অস্বীকাৰ কৰিলেই থাকিব পাৰিবনে নেতানিয়াহু

ইজৰাইলত নতুন চৰকাৰ গঠন নোহোৱালৈকে বৰ্তমানৰ প্ৰধানমন্ত্ৰী হিচাপে নেতানিয়াহুৱে কাৰ্যনিৰ্বাহ কৰি থাকিব পাৰে। কিন্তু ইয়াৰ অৰ্থ এইটো নহয় যে তেওঁ ইচ্ছামতে ক্ষমতাত অনিৰ্দিষ্টকাল থাকিব পাৰিব। দেশখনৰ সংসদীয় ব্যৱস্থা আৰু চৰকাৰ গঠনৰ সাংবিধানিক প্ৰক্ৰিয়াই এই ক্ষেত্ৰত সীমা নিৰ্ধাৰণ কৰি দিছে।

ৰাষ্ট্ৰপতিয়ে প্ৰথমে চৰকাৰ গঠনৰ বাবে নেতানিয়াহুক সুযোগ দিব পাৰে। তেওঁ ব্যৰ্থ হলে আন কোনো সংসদ সদস্যক চৰকাৰ গঠনৰ দায়িত্ব দিয়াৰ প্ৰক্ৰিয়া আৰম্ভ হব পাৰে। নিৰ্ধাৰিত সময়ৰ ভিতৰত কোনো পক্ষই সংখ্যাগৰিষ্ঠতা প্ৰমাণ কৰিব নোৱাৰিলে সংসদ ভংগ আৰু নতুন নিৰ্বাচনৰ পথ মুকলি হব পাৰে।

যদি বিৰোধী শিবিৰে সংখ্যাগৰিষ্ঠতা লাভ কৰি চৰকাৰ গঠন কৰে, তেন্তে ক্ষমতা হস্তান্তৰৰ প্ৰক্ৰিয়াও আইন আৰু সাংবিধানিক ব্যৱস্থাৰ অধীনত সম্পন্ন হব। কোনো প্ৰধানমন্ত্ৰীয়ে কেৱল ব্যক্তিগত ইচ্ছাৰ বলত নিৰ্বাচনী আৰু সংসদীয় প্ৰক্ৰিয়া অমান্য কৰি ক্ষমতা দখল কৰি থাকিব নোৱাৰে।

নিৰাপত্তা নে ক্ষমতাৰ ৰাজনীতি?

নেতানিয়াহুৰ সম্মুখত এতিয়া দুটা ডাঙৰ প্ৰত্যাহ্বান-এফালে ইৰানক কেন্দ্ৰ কৰি ইজৰাইলৰ নিৰাপত্তাজনিত উদ্বেগ, আনফালে সংসদীয় নিৰ্বাচনত সংখ্যাগৰিষ্ঠতা লাভ কৰাত ব্যৰ্থ হোৱা। ৰাষ্ট্ৰীয় নিৰাপত্তাৰ প্ৰশ্নত কঠোৰ স্থিতি গ্ৰহণ কৰাটো তেওঁৰ ৰাজনৈতিক কৌশলৰ অংশ হব পাৰে। কিন্তু নিৰ্বাচনত সংখ্যাগৰিষ্ঠতা নোপোৱাৰ পাছত কেৱল নিৰাপত্তাৰ যুক্তিৰে চৰকাৰ গঠনৰ অধিকাৰ দাবী কৰিব নোৱাৰি।

এই নিৰ্বাচনে ইজৰাইলৰ ৰাজনীতিত এটা মৌলিক প্ৰশ্ন পুনৰ উত্থাপন কৰিছে-দেশৰ নিৰাপত্তাৰ নামত ৰাজনৈতিক নেতৃত্বৰ ক্ষমতাৰ সীমা কিমান দূৰলৈ বিস্তাৰিত হব পাৰে? ইৰানৰ ভাবুকিৰ মোকাবিলা কৰাটো ইজৰাইলৰ বাবে গুৰুত্বপূৰ্ণ হলেও গণতান্ত্ৰিক ব্যৱস্থাত জনতাৰ ৰায় আৰু সংসদীয় সংখ্যাগৰিষ্ঠতাক উপেক্ষা কৰাৰ সুযোগ নাই। শেষ সিদ্ধান্ত নিৰ্ভৰ কৰিব নেতানিয়াহুৰে সংখ্যাৰ ৰাজনীতিৰে চৰকাৰ গঠন কৰিব পাৰে নে নোৱাৰে, তাৰ ওপৰত।

এদিনতে ৫০ হাজাৰ কোটি টকাৰ সম্পত্তি বৃদ্ধি গৌতম আদানিৰ

জন জন বিচাৰ
...✍ নতুন দিল্লী

শ্বেয়াৰ বজাৰৰ উত্থানেৰে এদিনতে সম্পত্তি বৃদ্ধিৰ নতুন অভিলেখ গঢ়িলে ভাৰতীয় উদ্যোগপতি তথা আদানি গোষ্ঠীৰ অধ্যক্ষ গৌতম আদানিয়ে। বৃহস্পতিবাৰে আদানি গোষ্ঠীৰ অধিকাংশ কোম্পানীৰ শ্বেয়াৰৰ মূল্য বৃদ্ধি পোৱাৰ ফলত তেওঁৰ মুঠ সম্পত্তিৰ পৰিমাণ ৫.২৫ বিলিয়ন ডলাৰ, অৰ্থাৎ প্ৰায় ৫০ হাজাৰ কোটি টকা বৃদ্ধি পায়। ব্লুমবাৰ্গ বিলিয়নেয়াৰ সূচক অনুসৰি, উক্ত দিনটোত বিশ্বৰ ধনকুবেৰসকলৰ ভিতৰত সৰ্বাধিক সম্পত্তি বৃদ্ধি হয় আদানিৰ।

এই উত্থানৰ ফলত আদানিৰ মুঠ সম্পত্তিৰ পৰিমাণ ১১০ বিলিয়ন ডলাৰলৈ



বৃদ্ধি পাইছে। বিশ্বৰ ধনাঢ্য ব্যক্তিৰ তালিকাত তেওঁ ১৮সংখ্যক স্থানত আছে। চলিত বৰ্ষত তেওঁৰ সম্পত্তিৰ পৰিমাণ ১৮.২ শতাংশ বৃদ্ধি পাইছে।

বৃহস্পতিবাৰে আদানি গোষ্ঠীৰ দুটা মুখ্য কোম্পানী আদানি এণ্টাৰপ্ৰাইজেছ আৰু আদানি প'ৰ্টছ এণ্ড স্পেচিয়েল ইকনমিক জ'নৰ শ্বেয়াৰৰ মূল্য পাঁচ শতাংশতকৈ অধিক বৃদ্ধি পায়। আনহাতে, আদানি পাৱাৰৰ শ্বেয়াৰৰ মূল্য তিনি শতাংশতকৈ অধিক বৃদ্ধি পোৱাৰ লগতে আদানি গ্ৰীণ এনাৰ্জি, আদানি টোটেল গেছ, আম্বুজা চিমেণ্ট আৰু এচিচিৰ শ্বেয়াৰতো ঊৰ্ধ্বগতি পৰিলক্ষিত হয়।

শ্বেয়াৰ বজাৰত এই উত্থানৰ পোনপটীয়া প্ৰভাৱ পৰে আদানিৰ ব্যক্তিগত সম্পত্তিৰ হিচাপত। অৱশ্যে এই সম্পত্তি বৃদ্ধিৰ অৰ্থনগদ ধনৰ সমপৰিমাণৰ উপাৰ্জন নহয়; মূলতঃ তেওঁৰ মালিকানাধীন কোম্পানীসমূহৰ শ্বেয়াৰৰ বজাৰ মূল্য বৃদ্ধিৰ ফলতেই এই পৰিৱৰ্তন ঘটিছে।

ইফালে, বিশ্বৰ ধনাঢ্য ব্যক্তিৰ তালিকাত আমেৰিকাৰ উদ্যোগপতি এলন মাস্কে ৯১৩ বিলিয়ন ডলাৰৰ সম্পত্তিৰে প্ৰথম স্থান অক্ষুণ্ণ ৰাখিছে। আমাজনৰ প্ৰতিষ্ঠাপক জেফ বেজ'ছ ৩৫৫ বিলিয়ন ডলাৰেৰে দ্বিতীয় আৰু গুগলৰ সহ-প্ৰতিষ্ঠাপক লেৰী পেজ ২৪৮ বিলিয়ন ডলাৰেৰে তৃতীয় স্থানত আছে।

আনহাতে, ৰিলায়েন্স ইণ্ডাষ্ট্ৰীজৰ অধ্যক্ষ মুকেশ আম্বানিৰ সম্পত্তিৰ পৰিমাণ ৭৭.৩ বিলিয়ন ডলাৰ। তেওঁ বিশ্বৰ ধনাঢ্য ব্যক্তিৰ তালিকাত ২৪সংখ্যক স্থানত আছে।

উল্লেখযোগ্য যে, বিশ্বৰ শীৰ্ষ ধনকুবেৰসকলৰ সম্পত্তিৰ উত্থান-পতন মূলতঃ শ্বেয়াৰ বজাৰৰ গতিবিধিৰ সৈতে জড়িত। আদানিৰ ক্ষেত্ৰতো বৃহস্পতিবাৰৰ এই অভূতপূৰ্ব উত্থানে ভাৰতীয় উদ্যোগ জগতত তেওঁৰ বিত্তীয় স্থিতি পুনৰ চৰ্চালৈ আনিছে।

GAURANSHI
INDUSTRIES

Gunika™

Purity in Every Drop, Nature in Every Product.

100% NATURAL

PURE NATURAL GOODNESS



- NO ADDITIVES
- BOOSTS IMMUNITY
- RICH IN ANTIOXIDANTS
- ECO FRIENDLY

TEA

NAME	MAKHANA (FOX NUT SUPERFOOD)	ASSAM CTC TEA	ASSAM CTC TEA
SIZE	200gm	250gm	100gm

HONEY



NAME	MORINGA HONEY	TULSI HONEY
SIZE	200gm	200gm



NAME	MUSTARD HONEY	LITCHI HONEY	WILD FOREST HONEY
SIZE	200gm	200gm	200gm

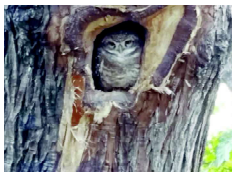
RAW & UNPROCESSED | PURE & NATURAL | DIRECTLY FROM OUR FARMS | TRUSTED BY THOUSANDS

3rd Floor, IIT Road,
Jayguru, Amingaon,
Kamrup, Assam - 781031, India

Contact :
+91-88224 20619

E-Mail :
gauranshiind@gmail.com
www.gauranshiindustries.com

VOICE OF ALL, FOR ALL
WEEKLY
JAN JAN VICHAR
Guwahati, Friday, 30 October 2026





Bengal CMSets November 30 Deadline for CAA Hearings

Jan Jan Vichar
...✍Raiganj

West Bengal Chief Minister Suvendu Adhikari has announced a tough approach towards alleged illegal infiltration from Bangladesh, declaring that his government will identify those who entered India unlawfully and initiate steps to send them back. At the same time, he has set November 30 as the deadline for completing hearings on 9,000 pending citizenship applications filed by Hindu refugees under the Citizenship (Amendment) Act (CAA).

Speaking during his first visit to North Dinajpur district since assuming office, Adhikari addressed an administrative meeting in Raiganj and later spoke at a public gathering. He said the district administration had been directed to complete the pending CAA hearings within the stipulated deadline. Adhikari said Hindu refugees who had allegedly been forced to leave Bangladesh because of their religious identity would be considered for Indian citizenship under the CAA. He appealed to eligible refugees who had not yet applied to submit their applications without delay.

I will give citizenship certificates to the refugees," he said, referring to the 9,000 applications pending in the district. He also said the legal process should be completed promptly so that eligible applicants do not remain in uncertainty.



Holding stations and border vigilance

On the issue of illegal infiltration, the Chief Minister said the state government would identify suspected illegal entrants, place them in holding stations and take steps for their return to Bangladesh in accordance with the law. He appealed to residents of border areas to assist the police and the Border Security Force (BSF) in identifying suspected cases of illegal entry. He also directed officials to take strict action against illegal madrasas operating in border areas.

North Dinajpur shares an international boundary with Bangladesh and has frequently figured in debates over border security, migration and citizenship. Adhikari's announcement places these issues at the centre of the new state government's priorities. However, any identification, detention or deportation must follow established legal procedures, including verification of nationality and compliance with applicable laws.

Amit Shah praised over citizenship drive

The Chief Minister described Union Home Minister Amit Shah as an "Iron Man" and said Shah had entrusted him with the responsibility of ensuring that eligible Hindu refugees receive citizenship certificates. Adhikari also said no Hindu refugee from Bangladesh should remain in Raiganj jail and called for the speedy completion of legal proceedings in such cases. His remarks underline the state government's stated intention to distinguish between refugees seeking protection and people alleged to have entered India unlawfully. The CAA provides an eligibility-based route to citizenship for specified religious communities from Pakistan, Bangladesh and Afghanistan who entered India on or before December 31, 2014. It does not automatically grant citizenship to every person claiming refugee status.

Warning to separatist groups

Adhikari also targeted separatist slogans and groups, saying that those raising demands such as "Kashmir wants freedom" should not be allowed to expand their activities in border areas. He used strong language against what he described as the "tukde-tukde gang" and warned against activities that, in his view, could threaten national unity.

On cow protection, he appealed to people not to harm cattle, describing cows as sacred to Hindus. He warned that those responsible for harming them would face a strong response.

The Chief Minister's visit combined three politically sensitive themes-border security, citizenship and religious identity. While his government has promised action against illegal infiltration, the implementation of that promise will depend on evidence-based identification and lawful procedures. Equally, the completion of the 9,000 CAA applications by November 30 will be an important test of the administration's ability to translate its announcement into action.

Kokrajhar MLA Plants 500 Saplings on Birthday

Jan Jan Vichar
...✍Kokrajhar

Kokrajhar MLA Sewli Mohilary marked her birthday on October 28 by planting 500 saplings at Ultapani in Sikhna Jwhwlao National Park and hosting a community feast for villagers from her constituency.

Moving away from conventional celebrations, Mohilary



combined environmental conservation with community service. She urged people to plant at least one sapling on their birthdays and make protecting nature a part of their celebrations.

The community feast featured traditional local dishes, reflecting the region's culinary heritage. Mohilary said she would continue working for public welfare with renewed commitment, adding that personal milestones could become more meaningful when marked through initiatives benefiting society and the environment.

Mukul Sangma Sounds Alarm Over Possible Militant Revival

Jan Jan Vichar
...✍Shillong

Meghalaya Leader of the Opposition Dr Mukul Sangma has raised concerns over reports that former militant groups may be attempting to reorganise, urging the state government to strengthen police preparedness, improve emergency response and insulate police appointments and transfers from political interference.

The concerns were raised at a meeting of the State Security Commission on October 28, where police operations and security challenges across Meghalaya came under review. Sangma stressed that the state must remain prepared to deal with possible security threats, mob violence, civil disturbances and other emergencies.

Calling for a stronger and more responsive police force, the opposition leader emphasised the need to fill vacant posts in the police department without delay. He also argued that appointments and transfers should be based on professional considerations rather than political or external influence.

Border Security, Immigration in Focus

Sangma also called for strict enforcement of the Meghalaya Residents Safety and Security Act, 2016, citing concerns over unauthorised influx and illegal immigration. Highlighting the security challenges along the Assam–Meghalaya inter-state boundary, he stressed the importance of better coordination between the two states to maintain peace and stability. He further drew attention to difficulties faced by landowners along the India–Bangladesh border, particularly residents whose access to their properties has reportedly been restricted by border fencing. He said the concerns of affected families must be addressed alongside efforts to strengthen border security.

Seeks Probe into Suspected Illegal Coal Trade

The opposition leader also demanded a comprehensive investigation into suspected illegal coal mining and transportation in Meghalaya. Citing alleged discrepancies in official coal stock records, he raised concerns about possible irregularities and alleged that influential backing could be allowing unlawful activities to continue.

He called for a thorough inquiry to establish the facts, identify those responsible and ensure accountability. Sangma's remarks brought several pressing issues—including police preparedness, possible militant regrouping, border management, immigration and suspected illegal coal operations—into focus.

The allegations concerning militant activity and coal-related irregularities remain matters for verification by the authorities. The state government's response and the effectiveness of enforcement measures will be crucial in addressing the concerns raised at the security commission meeting.

Assam Police Register 28 Child Marriage Cases

Jan Jan Vichar
...✍Guwahati

Assam Police have registered 28 cases of child marriage and arrested 32 people in Sribhumi district as part of a special enforcement drive against the illegal practice. The operation, conducted on the night of October 26 across several areas of the district, targeted alleged offenders and those accused of facilitating child marriages.

Additional Superintendent of Police Pranab Jyoti Kalita said the arrested individuals included 28 principal accused and four alleged abettors. All 32 were produced before the court, and police sought remand for further interrogation wherever required. Custody was granted in some cases. The action comes amid a renewed statewide campaign against child marriage.

Chief Minister Himanta Biswa Sarma announced on Wednesday that more than 500 people had been detained during the latest phase of the drive.

The Chief Minister said the government would continue its efforts until child marriage was completely eliminated from Assam. In a post on X, he reiterated that no one would be allowed to curtail the aspirations of girls through child marriage.

Dhubri Records 63 Detentions

Dhubri district has also witnessed extensive police action, with 63 people detained from areas under nine police stations in connection with alleged child marriage cases. Those detained reportedly include individuals accused of involvement in the practice, as well as parents and guardians suspected of facilitating such marriages. The police station-wise breakdown of detentions is as follows:

Dhubri Sadar: 18, Golakganj: 15, Bilasipara: 9, Gauripur: 8, Chapar: 5, Fakirganj: 5, Tamarhat: 2, Agomoni: 1

The figures provided for these police stations account for 63 detentions.

Assam to Train Moran, Matak Youths to Assist with Online Land Applications

Jan Jan Vichar
...✍Dibrugarh

In a move aimed at improving access to land settlement services, the Assam government will train youths from Moran and Matak-inhabited areas to help community members submit online applications under Mission Basundhara 4.0. Chief Minister Himanta Biswa Sarma announced the initiative after meeting representatives of Moran and Matak organisations in Dibrugarh on October 28.

The meeting focused on pending land settlement cases, difficulties faced by applicants, deadlines for payment of land premiums and other long-standing grievances of the two communities.

Sarma said the guidelines for land settlement under Mission Basundhara 4.0 for the Moran and Matak communities would be uploaded to the scheme's online portal. Selected youths would receive training to assist applicants in navigating the digital application process, enabling more people to access the scheme without facing unnecessary procedural hurdles.

The government is also considering extending the deadline for payment of pending land premiums and addressing eligible settlement applications within a stipulated timeframe.

Tribal Land Grievances Under Review

In a separate meeting, the Chief Minister reviewed land-related grievances raised by tribal communities in Lakhimpur, Dhemaji and Majuli districts. The discussions involved district commissioners, forest department officials and representatives of tribal organisations. Among the key issues discussed were difficulties in dealing with the revenue department, pending applications under Mission Basundhara 2.0 and 3.0, and the proposed allotment of up to 50 bighas of land to tribal families.

The government plans to review pending applications under the earlier phases as part of Mission Basundhara 4.0 and take steps to resolve eligible cases. Sarma said the administration would work towards resolving land disputes and ensuring permanent ownership rights for eligible tribal families.

Focus on Accessible Land Services

The proposed training initiative is intended to bridge the gap between digital land services and applicants who face difficulties completing online procedures. By involving trained local youths, the government hopes to make the application process more accessible to Moran and Matak residents. The proposed extension of payment deadlines could also provide additional time to applicants who have yet to clear their pending land premiums. However, the specific duration of any extension and the final implementation schedule were not announced in the available report. The meetings were held during the Chief Minister's two-day visit to Dibrugarh and Tinsukia districts.

India Pitches AI-Powered Maritime Security for 2028–29 UN Security Council Bid

Jan Jan Vichar
...✍New Delhi



India has placed maritime security and artificial intelligence (AI) at the centre of its campaign for a non-permanent seat on the United Nations Security Council for the 2028–29 term, signalling its intention to play a stronger role in addressing emerging threats to international peace and security.

Addressing a high-level Security Council debate on emerging technologies and maritime security, India's Permanent Representative to the UN, Ambassador Harish Parvathaneni, said technology should make shared maritime spaces safer rather than turn them into arenas of greater competition and conflict.

He described oceans as vital arteries of global commerce, connecting economies and supporting livelihoods, food security and energy supplies. Any disruption to major shipping routes, he warned, could have consequences far beyond the region where it occurs.

India has proposed greater use of AI, satellite surveillance, radar systems and vessel-tracking data to improve maritime awareness, identify suspicious activities and strengthen search-and-rescue operations. The country has also called for stronger protection of commercial vessels, seafarers, ports, communication networks and undersea infrastructure against both physical and cyber threats.

Parvathaneni stressed that technological progress must not widen the gap between developed and developing countries. Developing nations, he said, need access to technology, training and institutional capacity to protect their maritime infrastructure and participate in shaping global technology rules.

India also underlined the need for human oversight, accountability and safeguards in the use of autonomous systems and other emerging technologies. It called for international cooperation in accordance with the UN Charter and the United Nations Convention on the Law of the Sea.

The campaign comes ahead of the June 2027 election, when India and Tajikistan will compete for the Asia-Pacific Group's sole non-permanent seat for the 2028–29 term. The two-year membership, if secured, would give India a place among the 10 elected members of the 15-member Security Council.

Bhutan to Build 108 Buddhist Stupas in 14 Hours; Assam Prepares for 1 Lakh Visitors

Jan Jan Vichar
...✍Chirang

Bhutan is preparing for an extraordinary spiritual initiative, with 108 Buddhist stupas, known as Jangchub Chortens, set to be constructed along a 12-km stretch of the Mao Chhu river in Gelephu on November 1. The initiative, dedicated to world peace and spiritual harmony, is expected to draw more than one lakh visitors, including Buddhist monks, tourists, investors and diplomats from over 20 countries.

Around 4,000 volunteers and construction workers are expected to participate in the ambitious undertaking. Work is scheduled to begin at midnight on November 1, with the construction targeted for completion within 14 hours.

The event has also put Assam's Chirang district in focus, with the Bodoland Territorial Council (BTC) administration stepping up preparations to facilitate the movement of visitors travelling to Bhutan through the India-Bhutan border.

Chirang Gears Up for International Visitors

The Chirang district administration has strengthened security and arrangements along the approximately 40-km road connecting Samthaibari with Gelephu. The BTC administration has also constructed two welcome gateways at Samthaibari and Dadgiri to receive visitors heading to Bhutan for the event.

BTC chief Hagrama Mohilary formally inaugurated the two gateways on Wednesday, October 28, marking a significant step in preparations for the anticipated international gathering.

The arrangements reflect the growing importance of the Assam-Bhutan corridor, particularly as Gelephu advances its proposed development as Bhutan's Mindfulness City.

Dadgiri Envisioned as a Future Township

Mohilary has also outlined plans to develop Dadgiri, located along the international border opposite Gelephu, into a township that could complement Bhutan's proposed urban development project. To improve facilities for foreign visitors, the BTC administration has established infrastructure near the newly set up immigration centre at Dadgiri. These facilities include a guesthouse, a handloom and weaving centre, and three exhibition-cum-marketing centres linked to eri and muga silk and the tourism sector.

The initiatives are intended to provide visitors with better facilities while creating opportunities for local artisans, traditional weavers, tourism operators and small businesses.

Spiritual Diplomacy Meets Economic Opportunity

Bhutan's plan to construct 108 Buddhist stupas within a tightly scheduled 14-hour period is being presented as a collective expression of peace and spiritual harmony. The anticipated participation of visitors from more than 20 countries is expected to give the event an international dimension.

For Assam, the gathering presents an opportunity to strengthen cross-border connectivity and showcase the cultural and economic potential of the Bodoland region. Improved visitor facilities, local handicraft promotion and tourism infrastructure could help communities along the border benefit from increased movement between the two countries. However, the scale of the expected economic benefits will depend on visitor numbers, travel arrangements and the long-term development of tourism infrastructure.

As Bhutan prepares for its landmark spiritual gathering, Chirang is positioning itself to welcome international visitors and explore new opportunities in tourism, traditional crafts and cross-border cooperation.

EDITORIAL

Arab Voters: An Emerging Political Force in Israel

Israel's Arab community, long confined to the margins of the country's political establishment, is increasingly emerging as a decisive force in its electoral politics. Making up approximately 21.1 per cent of Israel's population, or around 2.147 million people, Arab citizens can no longer be treated as a peripheral political constituency.

Since Israel's establishment in 1948, Arab citizens have had voting rights, but their political representation remained limited for decades. Until 1966, they lived under military administration, facing restrictions on movement and other aspects of daily life. Independent Arab political movements gradually emerged, seeking equal rights, greater representation and recognition of Palestinian identity. The formation of the Joint List in 2015 marked an important attempt to consolidate Arab political influence. The latest election has once again highlighted their importance. In the 120-member Knesset, a government needs at least 61 seats. With Benjamin Netanyahu's bloc securing 53 seats and the opposition bloc 48, the 19 seats held by Arab parties have become politically significant. This does not automatically mean Arab parties will join a governing coalition. Their ideological differences and the reluctance of major political blocs to depend on their support remain significant obstacles. Nevertheless, their electoral strength gives them considerable influence in government-formation negotiations.

The larger message is clear: Israel's democracy cannot afford to overlook a community representing more than one-fifth of its population. Electoral participation must translate into meaningful political representation, equal rights and social inclusion.

Farooq Rash, But Govt Too Must Engage Valley's Complex Voices

Jan Jan Vichar
...✍Bhopinder Singh

To mistake provocation for treason is to misunderstand Kashmir. Farooq Abdullah often deserves criticism for his words, but India needs to win over its regional voices, not drive them away. Farooq Abdullah has perfected the art of being simultaneously exasperating and indispensable. At an age when most political veterans retreat into ceremonial irrelevance, the National Conference patriarch continues to provoke and unsettle. His latest assertion that Pakistan's persistent internationalisation of the Kashmir question is "saving us", coupled with his suspicion of New Delhi's intentions, has invited accusations of being "anti-national" and "seditious". The outrage is understandable. Reducing a complicated political career to a single incendiary remark is not.

Mr Abdullah's statement was hardly a model of political discretion. To suggest that Pakistan, whose history of sponsoring militancy and destabilising Kashmir is well documented, is somehow protecting Kashmiris is both ungracious and dangerously misleading. A leader of his stature should know the difference between acknowledging international attention and implying gratitude to a neighbour whose actions have inflicted immense suffering on the Valley. His simultaneous insistence that Kashmiris have never disavowed their Indian identity complicates the charge against him, but does not erase the recklessness of his rhetoric.

Farooq Abdullah has never been a politician of immaculate consistency. He is a flamboyant contrarian, a secularist comfortable singing bhajans and a regional leader who oscillates between national affirmation and denunciation of the Centre. His instinct is to speak to his constituency's anxieties, sometimes illuminating genuine grievances, sometimes obscuring them through theatricality. He can be infuriatingly imprecise about his words, regardless of their consequences. But unpredictability is not proof of disloyalty.

The larger question is whether every provocation by a Kashmiri leader must become a referendum on his patriotism. Mr Abdullah has repeatedly affirmed Jammu and Kashmir's place within India, invoking the legacy of Gandhi, Nehru and Maulana Azad. This is the central tension of his politics, i.e., he claims India as a constitutional home, while challenging what he perceives as its treatment of Kashmir. Whether one agrees with his diagnosis or not, the distinction matters.

The 'Idea of India' cannot mean uncritical applause for the government of the day. Nor can it demand that regional politicians suppress every grievance to establish their national credentials. A plural republic must accommodate dissent without converting it into a loyalty test. Otherwise, patriotism becomes a performance measured by political conformity rather than commitment to the constitutional order. There is an inconvenient irony in the denunciations emanating from the ruling establishment. The BJP-led National Democratic Alliance governed with Abdullah's National Conference as an ally. His son, Omar Abdullah, served as Union minister of state for external affairs from 2001 to 2002 under the Vajpayee government. These facts do not grant Farooq immunity from scrutiny. They expose the convenience with which political respectability is bestowed upon regional leaders when their support is useful, and questioned when their rhetoric becomes inconvenient. The BJP's alliance with the People's Democratic Party offers an even sharper illustration. In 2015, the ideological adversaries formed a coalition government under Mufti Mohammad Sayeed and subsequently Mehbooba Mufti. The arrangement collapsed in June 2018 when the BJP withdrew support. Political engagement with a party accused by critics of accommodating separatist sentiment was evidently not incompatible with governance, until circumstances changed. The lesson is not that Farooq Abdullah, Mehbooba Mufti or other regional leaders should be spared criticism. Their rhetoric can be irresponsible and their political calculations opportunistic. Mr Abdullah should be challenged directly — how does Pakistan's diplomatic posturing translate into tangible protection for Kashmiris? What justifies his distrust of Delhi? Can he distinguish advocating Kashmiri rights from lending credibility to a hostile neighbour's geopolitical agenda? Such questions are more democratic than simply branding him a traitor. Kashmir's regional politicians occupy a space that national parties cannot easily replicate. They speak the language of local anxieties, historical wounds, identity and alienation. They can translate disaffection into constitutional politics, or, if persistently delegitimised, lose their ability to persuade those who feel unheard. This is not appeasement, but strategic engagement. Alienating these intermediaries may satisfy the national appetite for denunciation while weakening the democratic links that bind Kashmir to India. India's sovereignty is not so fragile that every intemperate sentence by an elected politician threatens it. A confident constitutional democracy distinguishes objectionable speech from demonstrable disloyalty, and dissent from criminal conduct. Accountability must be proportionate, evidence-based and consistent, not calibrated to partisan outrage. Farooq Abdullah is neither beyond reproach nor beyond redemption. His remarks deserve a searching rebuttal and a clear explanation. But the answer cannot be to erase the political space he occupies. Kashmir's integration requires more than territorial control; it demands political trust, constitutional credibility, and a sense of belonging that survives disagreement.

The ultimate test of the 'Idea of India' is not whether Farooq Abdullah always speaks wisely. He plainly does not. It is whether India can challenge his excesses while recognising the citizen, politician and constituency behind them. To win Kashmir's confidence, India must do more than silence its enfant terrible. It must give him, and those he represents, compelling reasons to believe that their future lies within the republic.

For federalism to be truly cooperative, revive the Inter-State Council

Jan Jan Vichar



...✍Shashi Tharoor

It's been rumoured for weeks that the government wished to reconvene Parliament (whose monsoon session has deliberately not been prorogued) in order to push through the delimitation bill that it hopes will lock in a two-thirds majority for the states in which the BJP is strong. Now it seems that isn't happening, either because the government isn't sure it has the votes, or because it fears that convening Parliament in the present environment will merely give the Opposition one more forum to raise a clamour about the Election Commission's malfeasance.

Whatever it eventually does, deciding the issue of delimitation in Parliament is not enough: It bypasses an essential element in our federal system, the states. Any delimitation should only follow a grand national conversation that takes the views of state governments into account. But what forum would permit them to express their views on a matter of such transcendent importance?

There's no obvious answer, unless the government is prepared to revive the Inter-State Council from its long-standing state of desuetude. Framed under Article 263 of the Constitution, the Council was conceived by the founders as a vital institutional mechanism to foster federalism, facilitate inter-governmental consultation, and harmonise the disparate interests of the Union and the states. Yet, despite its potential, the council lay dormant for over four decades following Independence, only to be formally constituted in 1990 on the recommendation of the Sarkaria Commission.

This initial activation was heralded as a watershed moment for Indian democracy, promising a consultative platform where state governments could engage directly with the national executive on equal terms. However, it has been subject to institutional atrophy and systemic neglect. Deprived of operational autonomy, regular meetings, and independent authority, it remains largely ineffective, leaving a critical structural void at the heart of Indian federalism.

In the process, we have betrayed the visionary intent embedded within Article 263. The framers of the Constitution were conscious that they had created a federal structure that featured a strong centralising impulse in an extraordinarily diverse country. Article 263 was deliberately drafted in flexible and wide-ranging language, empowering the President to establish a council that could investigate and discuss subjects in which some or many states, or the Union and one or more states, have a common interest. It was designed to bring about better coordination of policy and action between the Centre and the states. No wonder the Sarkaria Commission identified the dormant Inter-State Council as the missing link in India's federal equilibrium. It envisioned, as the Constitution did, a body that would serve as the premier arena for inter-governmental negotiation, policy alignment, and political conflict resolution — a dedicated constitutional organ to navigate the complexities of power-sharing in a pluralist polity.

Unfortunately, rather than operating as a constitutional chamber mediating between the Centre and the states, the Council became an appendage of the Home Ministry, subject to its bureaucratic imperatives and political priorities. This subordination rendered it a minor department within a central ministry rather than an independent administrative entity capable of setting an unbiased national agenda. The council's statutory obligation to meet regularly was repeatedly disregarded by successive governments; long gaps of several years between meetings became the norm. This circumscribed authority reflected a preference for unilateral central policymaking or for informal negotiations over institutionalised dialogue, and the Council never acquired the prestige and leverage necessary to influence legislative initiatives or policy decisions affecting state rights, revenues, or constitutional questions like delimitation.

India needs a continuous, systematic process of shared deliberation and consultation with the states. The Constitution gives us one. It's time we took it out of cold storage, reconstituted it as a genuinely autonomous body and re-energised it to serve the demands of modern governance. The Council's Secretariat should be reimagined as an independent statutory authority, staffed by a diverse pool of civil servants and technical experts. Its meeting schedule must be strictly institutionalised, ensuring that the Prime Minister, key Cabinet ministers, and State Chief Ministers are convened at predictable, regular intervals to deliberate on matters of shared national importance.

The result of the Inter-State Council's atrophy is the erosion of trust between central authorities and states, especially those ruled by Opposition parties. In contemporary governance, most policy challenges, ranging from economic and tax reforms to ecological preservation, public health crises, and internal security, cut across jurisdictions. When a platform like the Inter-State Council is inactive, central policies are made without meaningful consultation with state CMs. This top-down approach inevitably triggers political friction, administrative resistance and constitutional controversy — as is certain to occur over delimitation.

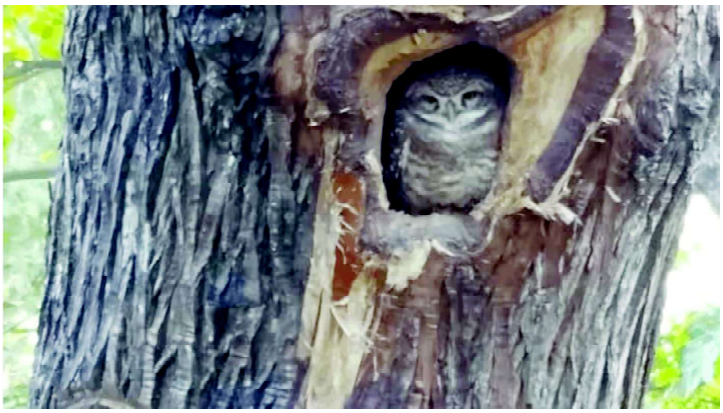
India needs a continuous, systematic process of shared deliberation and consultation with the states. The Constitution gives us one. It's time we took it out of cold storage, reconstituted it as a genuinely autonomous body and re-energised it to serve the demands of modern governance. The Council's Secretariat should be reimagined as an independent statutory authority, staffed by a diverse pool of civil servants and technical experts. Its meeting schedule must be strictly institutionalised, ensuring that the Prime Minister, key Cabinet ministers, and State Chief Ministers are convened at predictable, regular intervals to deliberate on matters of shared national importance. The Council should serve as the primary locus for negotiating major policy reforms, evaluating the local impact of national schemes, and mediating inter-state disputes regarding resource sharing, infrastructure, environmental management and constitutional change.

Rebuilding the Inter-State Council as an empowered body would fundamentally alter the trajectory of Indian governance. By providing a permanent, inclusive platform for transparent dialogue, the Council can bridge the structural gap between central legislative authority and state administrative execution. It would transform Centre-state relations from an erratic cycle of political confrontation into a cooperative partnership grounded in mutual respect and constitutional legitimacy. It would permit state views to be taken into account before national policies are made. In a nation characterised by vast socio-economic diversity and complex federal dynamics, a fully functional and independent Inter-State Council is not a luxury, but a structural necessity.

Prime Minister Modi popularised the phrase "cooperative federalism", but it has remained a platitude without a platform. He now has a chance to give it substance — and he doesn't even require a law. The Inter-State Council is already in the Constitution. Just bring it to life.

Guwahati's Nocturnal Treasures Study Records Eight Owl Species

Jan Jan Vichar
...✍Guwahati



Guwahati's bustling streets and expanding urban landscape conceal a fascinating world of nocturnal wildlife. A new scientific study has documented eight owl species across the city, revealing the richness of its night-time biodiversity while raising concerns about urban noise pollution and the shrinking natural habitats that these elusive birds depend on.

Published in the journal Urban Ecosystems, the study recorded owls in 24 of the 33 one-square-kilometre grid cells surveyed across Guwahati between November 2023 and July 2025. The findings offer an important glimpse into the city's lesser-known ecological wealth and underline the need to integrate wildlife conservation into urban development.

The Barn Owl and Spotted Owlet emerged as the most frequently detected species during the survey. Six other species were also recorded: the Brown Hawk Owl, Brown Fish Owl, Collared Scops Owl, Mountain Scops Owl, Oriental Scops Owl and Asian Barred Owlet.

Together, these findings demonstrate that Guwahati continues to support a diverse community of nocturnal birds despite the pressures of urban expansion, traffic and changing land use.

Eight Species, One Urban Landscape

Owls are among the most elusive inhabitants of the natural world. Their largely nocturnal habits, quiet movements and ability to remain concealed among trees and vegetation make them difficult to observe. Yet their presence in an urban environment can reveal important information about the health of local ecosystems. The eight species recorded in Guwahati represent a significant component of the city's nocturnal biodiversity. Their occurrence across multiple surveyed areas suggests that suitable habitats continue to exist within the urban landscape, even as buildings, roads and other infrastructure transform the surroundings.

Owls also perform an important ecological function by helping regulate rodent populations. As natural predators, they contribute to the balance of urban ecosystems and highlight the value of conserving wildlife that often goes unnoticed in everyday city life.

However, the presence of these birds should not be taken as a guarantee that their habitats are secure. Continued urban growth may place pressure on nesting locations, feeding grounds and roosting sites, making the protection of remaining natural spaces increasingly important.

When the City's Noise Drowns Out Nature

One of the study's key observations concerns the impact of urban noise on wildlife surveys. Traffic and other background sounds can mask owl calls, making it harder for researchers to detect birds even when they are present in an area.

This creates a significant challenge for monitoring urban biodiversity. Owls are often identified through their calls, but the sounds of a busy city can interfere with this method of detection. Consequently, a survey that fails to record an owl does not necessarily establish that the species is absent from that location. The distinction is important for scientists and urban planners alike. If detection difficulties are not taken into account, wildlife populations may be underestimated and the ecological value of certain areas may be overlooked.

Noise pollution is therefore more than a question of human comfort. It can also affect how researchers assess the distribution of wildlife and understand the relationship between animals and their changing surroundings.

The findings reinforce the need for systematic, long-term monitoring methods that account for the limitations of studying wildlife in noisy urban environments.

Green Patches: Lifelines for Urban Wildlife

As Guwahati expands, its remaining green spaces are becoming increasingly important for wildlife. Vegetated areas, wetlands, mature trees and other natural patches can provide shelter, nesting opportunities, roosting locations and feeding grounds for birds. For owls, the availability of suitable habitat can be particularly important. The conservation of mature trees and connected green spaces may help sustain the conditions needed for these birds to survive alongside a growing human population.

Wetlands and vegetated patches also support broader ecological networks, benefiting a range of species beyond owls. Protecting them can help maintain ecological connectivity within the city and reduce the isolation of wildlife habitats. Urban development and biodiversity conservation need not be opposing goals. Thoughtful planning can accommodate the needs of residents while retaining natural areas that contribute to the city's environmental health.



Printed & Published by Purvanchal Prints, GMCH Road, Harbala Market, Bhangagarh, Guwahati-781005 Contact: 69001 26012
Email : Official.janjanvichar@gmail.com,Website : www.janjanvichar.in ● Executive Editor : Subhash Kumar Choudhary ● Editor : Dhaneshwar Choudhary